

DPN 6062

Title : स्कन्द पुराण केदार खण्ड SKANDA PURĀṆA KEDĀRA KHAṆḌA

Run. No. 6753

Cat. No. 81

Micro. No.

Subject पुराण Purāṇa

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 47 x 10

Folios 3-80 Extant folia.
62 Lines (in a page) 7/9
missing 1-2, 6-9, 51-60, 62, 68
Chapt. / act /

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

पशुपतिमान पःमाय

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Paśupati-man Pakmaṇya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

P. T. 8.

[illegible]

20

15

10

5

आ३

कापिगा२५०

असो विपुनक्षानसु पियः सदा ॥ हनयुत पिभवा नीपतिने का इत्ययथा ॥ आत्मसमा विना मरुता सुधो मोनी समस्तनशा कर्मव्यस्मिन्नया ॥ असा नानी ना हि मया धु
 याचनवकू वीपुननर्वववा द्विजा ॥ सर्वैर्कवकिद्रिष्क रुथो यक्ष्मसखलो महान ॥ नृगकुत्वा ववसु दधी विर्वीकमववीत ॥ ॥ दधीचिनुवाच ॥ सर्वैर्वा मृषिवर्या लो
 रुविगात्मनम ॥ अनयार्थमहोखा गोविना गेनमसुस्मना ॥ विना अभिमहानुधो अगुलो नीरुविषाणि ॥ नवमूकू दधीधो मो नृकनवविनिर्जत ॥ यरूवागच्चदकस्य
 चागुर्मगनशा मोनो विनिर्जते दक ॥ पुरुसनिदमववीत ॥ गनशाजिव प्रिया विषादधीचिन्मनामत ॥ आ विरुचिकामन्दास्वमिथ्या वादना ॥ ४२४ ॥ वदवाक्का
 नास्त्वा आरुक्कगु कर्मलि ॥ वदवादाना यूर्यसर्वविषु पूना गमा ॥ यरूमे सरुलं विषा ॥ ४२५ ॥ वदवाक्का विना दिवा ॥ तदा ते दवजयने चकु ॥ सर्वमहर्षय ॥ नृगसि
 पर्वने न न्धमो वा दन ॥ अत्रा गुरुविता ननसखी हि ॥ पतिवो नीता ॥ दाकाय वीमहा देवी चकार विविधसुदा ॥ कीज विमानम कसू कन्दू का या ॥ ४२६ ॥ ससुगशा की
 गदवी ददशममहासती ॥ यरूमे यार्ग सामञ्जो हि न्धसहिने युमु ॥ कृगमिषा निवन्धाय विजयं पृच्छसत्वनम् ॥ तथा का विजया देवी नृपपुच्छय ॥ अचित
 गेनगत्सर्व दकस्य वमया दिकम् ॥ नकुत्वा त्वनिगा देवी विजया जागसंश्रमा ॥ कथयामास गत्सर्वैर्य इकं गजिनारुणम् ॥ अस्मत्कान लं देवी किमा कानन

४

उ३

न३

मकृगम् ॥ दकलपिगामा गाव विस्मगा हयशस्विनी ॥ पृच्छामि गकृने वायकान लं वायकान लं कृत निश्वयशास्त्रपयित्वास खिंनत वा गता गकृने पति ॥ ददर्श गैसरा
 म ॥ क्षुति लावनमवस्तिगम ॥ गले ४ पतिवृते सर्वेष्वुमुमुदि रिरुदा ॥ वा ॥ अरुङ्गीरुथानन्दी ॥ जेलाया हिमरागपा ॥ शानन्दि स्वपार्षदामूखा कृति कायातिरि
 षल ॥ धूमो वरु ॥ ४ ॥ श्वेतकेतु ॥ श्वेतवाङ्मूर्ध्वरुचिना ॥ धूमो को धू केतु श्वधूमपादसु ॥ थेवच ॥ नृगवा नीचवहवा ॥ गलान्दानवर्कि ॥ कविहयानको नेडा ॥ कवध्वानुगथ
 यन ॥ विलाचनायु कविच्च ॥ नृहीना सुथयन ॥ ॥ नृक्षदनायु कविच्च ॥ अघिहीना सुथयन ॥ कतहीनायु कविच्च ॥ चक्रीहीना सुथयन ॥ ॥ नृवहगा पुनगल ॥ सधनकृतिवास
 स ॥ जटाकेलाय सत्सता ॥ सधनूडा कुरुय ॥ ४ ॥ जिगन्धया वीगनाम ॥ सध विषयय विव ॥ ४ ॥ गि ॥ सध ॥ य विवृग ॥ ४ ॥ गकृनाला गकृन ॥ ४ ॥ दृष्टसुयोगया विरु ॥ आसनं यनमाकुत
 आदिकृतिना सहसा ॥ जगमालिचर्म निधि ॥ लिखनसुविगास्त्री ॥ गोपीनियूकनवज्ञरा ॥ यमादिने वयाति ॥ सावकमानयून ॥ ४ ॥ मुन ॥ किमागमनकार्यक ॥ वदनीधुसुम
 धर्म ॥ नवमूकगदा गेन ॥ उवाचस्मिन् लाचना ॥ ॥ सत्यवाच ॥ यिगुर्ममगृह यरू केसालवनवाचन ॥ गमने दवदवानी ॥ गत्सर्वैर्य ययुता ॥ सृष्टा मयवधम ॥ ४ ॥ सृष्टि ॥ ४

क२

वर्त ॥ यागिनीयक संयुक्तं तथ पुमथ संवृण ॥ कुरे प्रचामने सुग संवृण ॥ महावर्त ॥ कश्चिद्विष्णुव्यावृण ॥ सिंहवृण सुथाय ॥ अययवत्तवमवृण ॥ अहृना
 पुगथयव ॥ नरि ॥ सध्वे सुदादृष्टु विष्णुव्यामदीयक ॥ वीवरुदा मेहावा ॥ के नर्ववा सुमवी ॥ मृगत्वया गरीयस्मा द्विष्णुवन्दा महेंदय ॥ ददस्य यदयागि
 त्वं कथं जागो ॥ सिगद्वद ॥ दोकायिष्णु कर्णयचनदृष्टु किं त्वयानेद्य ॥ त्वंचायियं ददस्य ॥ कवदानार्थमागम ॥ अवदानं पुयका ॥ सिगवचायिमहायुज ॥ उवमं
 कायुलम्यादो ॥ विष्णुवृदसुवृयि लम ॥ वीवरुदा गमोत्तवा पुनर्वा सुमथा ॥ उवी ॥ यथा लं सुथा स्तुहि ममना सुग संलय ॥ गथा ॥ त्वं महावाहा ॥ यदका मागु न
 सिग ॥ नम्यामि यमनादृष्टु ॥ यदितुत्तमात्मना ॥ गत्यगद्वचनं लुत्वा ॥ वीवरुदस्य धीमम ॥ उवाचयुहमन्दव ॥ विष्णु ॥ सध्वे लुभं लुभ ॥ ॥ विष्णुववाच ॥ वृद्धमेज
 युसूना ॥ सिया विग ॥ सिमहामहामम ॥ अननया धिग ॥ सध्वे ॥ यदार्थयचन ॥ यम ॥ ददुनो विदिता ॥ धनकर्म निष्पन्नयेदहि ॥ अहं लक यवा धीन सुथा ॥ सोविमहं ध्वन ॥
 ननेवका ॥ वलनाग ॥ ददस्य यजनं पुनि ॥ आगनाहं वीवरुदुवृदकाय समुहव ॥ अहं निवायेया मित्वा ॥ त्वंचा माचि निवायेया ॥ ॥ लक वनि ॥ लविन्द ॥ युहस्य समहायुज ॥
 पुगयावनमाहृत्वा ॥ दमाहजनाहर्न ॥ यथालिव सुथा त्वं हि ॥ यथ त्वं यगथा ॥ निव ॥ सवाका ॥ यवयं सध्वे ॥ गववा लक नस्य च ॥ गकुत्वा वचनं गत्य वीवरुदस्य मा ॥ य

स्यवः देवाकुं जगदयनमं लुभ ॥ याधयस्त्वमहावाहा ॥ मया साद्वमलकिग ॥ गवामे ॥ यथ्यमानो हं गच्छामि गवने त्वं ॥ तथत्य क्वाच वीवा सो ॥ वीवरुदा महावली ॥
 त्वाय मे मकुलि ॥ सिंहनादेर्जगर्जह ॥ विष्णुव्यायिमहाधा ॥ नरवनादचकानस ॥ गकुत्वा यननादवा ॥ नर्ण हिलायय ॥ यम ॥ यद्वचं सुदासध्वं लोकयाला ॥ सवासवा
 दिमुनाहना नदीवज्जलनयवृत्त ॥ नन्दि नाचहग ॥ लकुमुल्लनगथानेय ॥ वाय ॥ नाहमारुमी ॥ रुद्रिष्णुवायुनाहगे ॥ लुने नसिगध्वनल ॥ गथा सवाग्मनाहग ॥
 मनसहसं गुर्म महाकासावता निग ॥ कववलाचमं गुर्म ॥ क्वापुनायनि ॥ सय ॥ वनलेन समं युद्धं ॥ मृगु ॥ सुवमेहावल ॥ यय ॥ धयययाग ॥ गला ॥ विस्मय मि
 नेर्जुन नममागम्य च लुभ वनवरुन ॥ यधयनमाकुल ॥ नेमृगं च विठु मयन ॥ यागिनीयक संयुक्ता ॥ रैववा नायका महान ॥ विदोर्थे दवान खिलानयथो ॥ लिलितमद
 ॥ कृगयाला सुथा चामा ॥ त्वं पुमथ गुप्तेका ॥ गकिनी गकिनी वीडानवड्गो सुथे वच ॥ यागिनीया ॥ युधानाथ ॥ गथा ॥ क्वापुकादय ॥ नइ ॥ यय ॥ लिलि ॥ अरुवृद्ध ॥ वि
 लर्नवड्ग ॥ लेकमानं गदासेन्य विलासु सवनादस्य ॥ विहाय नं दिनं यथा ॥ वीवरुदं समाक्रिय ॥ वीवरुदा विहायेव विष्णु दवन्दुमाहिग ॥ गथा ॥ युद्धमदृगधा
 विष्णु ॥ अयवया विव ॥ वीवरुदं यदालका हुनुकामाहृत्वा निग ॥ गावकुर्कं गजस्कंहि ॥ यूनयामा समाजले ॥ वीवरुदा नृया विष्णु ॥ इनिवायी महावल ॥ गदनुलेह
 नीध ॥ वज्जलनगर्व ॥ सिगजं च सवज्जि ॥ वासवं गुम्भू ॥ मृग ॥ हाहाका नामहाना सीरुगानां गययथा ॥ वीवरुदं गथा ॥ लेहनुकामं ययनं ॥ त्वयामा

20

15

10

5

संज्ञावत्पु॥

73

व॥ ॥ लामगुवाच ॥ संमार्जनं च कूर्चं नि नवाथय लिवाङ्ग (॥) तवे निवययुयाय जगद्व्याप्यं निच ॥ थ लिवाययुय कूर्चं नि दर्थ्यं समहायुगं । रवि घाति
 निवस्या (॥) यार्थं दार्शनं नथ गना ॥ चामना लिपुययुयं नि धवयवस्य गु लिन ॥ चामने वीर्यमाना स्तु रविघाति जगत्पुथ ॥ दीय दानं युक्चं नि महा धवाययु नना
 ॥ गजालिना रविघाति नि धिनेला कृ दीय कर्ष ॥ धुयं थययुय कूर्चं नि लिवायययमात्मने । यललिना रविघाति नि उद्धर्नं नि कूल द्ययं ॥ दीय दानं युक्चं नि थव हवि
 हवा गुग ॥ गजालिना रविघाति नि धाद्धर्नं नि कूल द्ययं ॥ निवर्धययुय कूर्चं नि रक्का हवि हवा गुग ॥ सिक्क सिक्क कुरु लु पा प्रवर्ग नि हिगं नवा ॥ रगं निवाल यथयुय
 कूर्चं नि नवा रुमा ॥ यो प्रवर्ग नि रुलं गेव दिगुर्लं नागुर्मलय ॥ नृगर्नं थयुक्चं नि ॥ ॐ हर्कं पुण्यमा विच । त्वर्ग हिगं पुमीदर्थ यावरु स्या सिक्क कर्तन ॥ यावदुमा
 द्विज (॥) द्वा नागकाया विद्या नमः ॥ कावयं निच थ विद्या ॥ या सो दवृद्धु मिक्क । हवि हवस्य महाया ॥ या प्रवर्ग नि यनं गति ॥ लुद्धव वलिगं थ हि कूर्चं नि हव
 मंदिनं । स्वीयं थव कर्णवा यि ॥ या नि यत्र मां गति ॥ रं गवली युक्चं नि नवानाथ ॥ लिवाङ्ग (॥) नृवि लक्ष्म रविघाति नि वला कययं गना ॥ विगान थयुय कूर्चं
 नि नवा ॥ सकृत्तिना यि हि । गावयं नि कूल कृत्स्नं नि वला कयं गना ॥ यन ॥ थचना दमयी द्ययं । निवर्धय नि लिवाल थ । गजस्विन ॥ का हिमं गा रविघाति जगत्पु
 थ ॥ एक कालं द्विकालं वा । त्रिकालं चान्यथ ॥ ग्राह्या वा दनिडा वा । सुखं ॥ दालु मूचयं ॥ लुद्धवान् रज गे था सो लिवायययमात्मने । कूलका टि समुद्धृत्य लि
 वि

नसह मादम ॥ अमेवादाह्वंतीम । मितिहार्मं युवा गनं । ॐ नृधुमं प्रसवा दं यमस्य च महात्मन ॥ यवा कुरगय (॥) क्रा सी दिनुयं नाना धिय ॥ पुनि हाना रि (॥) धवीना मुगया
 वसिक्क ॥ सदा ॥ अरुक्क ॥ सदा कुरव ॥ कचलं यने था मं हाने । यत्र या ले निजया ननयुक्का नि सकल ॥ सदा ॥ यत्र मूर्तयं ठा नि थि यत्र उथयु ला लुप ॥ वा क्लम घा टि गा
 सन सना था मा निवर्गनं ॥ गुन नल्य ग मा अर्थ सदा का अरु न गत्क ॥ व ॥ गथा हू गो नृग ॥ सध्वं ना रू सस्य इवा त्मन ॥ ॐ वं वं विधं ना रू चेका वस इना त्मवान् ॥
 गन ॥ कालं न मं हना । य ॥ अरु ल्या य इ मं नि ॥ ग दया मी पुनी मा ॥ सो ॐ नृमं ना उवा त्मवान् ॥ य मा नि के म नू या य उद्ध कर्तन कल्म यम । यम नृदृष्ट सग मा
 ॐ नृमं ना रू ग । क्ति ॥ अरु ल्क न ये ना रू ता । न मा मि सित्र मा नृय ॥ इ ता नृ स रू त्मा मा स य मा थ म् र गा वि न ॥ या ले वृद्ध मि लु मं न मूक्का था वा च ध म् मा र । ग कृ य
 थ कृ ना ला का नृ द्वा ना रू नृ था रु मा या । व दि नृधु मा म ध्य या व त्म था म रू स ले ॥ थ चि र्ता नि या व च्च ना व त्म थ मू खी रु व ॥ सृष्टि गि स्तु मं हा ना ज नि व रु का सि नि र्थ
 दा । य म स्य व च नं गु मां ता ॥ ॐ नृमं ना रू रा ख ग ॥ ॐ नृमं ना उवा च ॥ अ हं लि वा ने जा ना मि मृ ग या व सि का य म ॥ नृक्ता वे च नं ग स्य य मा वा क्य म रा ख ग ॥
 ॥ ॥ य म उवा च ॥ अ हं नृमं नि उ कं त्म दं स दा त्म या । न न कं म वि या क न स दा य मा मि मा न द ॥ नृमा त्मं ग कृ के ला र्म य ध्वं नृ क र्चं यु नि ॥ ॐ वं स रू वि स स्य य
 म स्य च महात्मन ॥ अ ने ना ॥ नि व द्वा ता स्त वृ था वृ टा म हा पु रा ॥ नी ल क र्ण द ल पु जा ॥ य ॥ अ व क्ता मि ला च ना ॥ के य दि न ॥ कृ लु नि न ॥ ग ल्प ली क्ति

उहव२

कदाचरु॥

[illegible]

वा निना ॥ कन (लेकन पूजा र्थं विल्वपत्रं वसार्पयन् ॥ द्वितीयं कन (लेकन मृगमार्गं समर्पयन् ॥ तृतीयं लमसंयुक्तं संकल्पं मनसा कृत्वा ॥ अथ पुनरिति पूजां वैक
 कनिष्ठा मियुयत्नः ॥ त्वं भस्वामी चरुकरुं अथ पुनरिति कन ॥ नव नियमकं हत्वा किं नो गुरुमा गतः ॥ नन्दी ददर्श तत्सर्वं किं नो न वयत्कृतं ॥ अथ वसु
 चतुष्टयं अमर्धं गिदसन्निधौ ॥ विधूता नियत्रत्ना निहिसकं नयनसूतः ॥ विनायकं एव नन्दी जान किं विदुमथ म ॥ कथिना निच विद्या निजि वयं जानतस्य
 वा ॥ उपै स्तिता निता न्ये वममराश्च विषे र्पयन् ॥ नव विमृषास् विनये काला जिवमन्दिन ॥ यथा गतं नमा ॥ न न न दोह गुरुमा गतः ॥ न न न न्दिन माला कृत्वा ध
 गतमानसं ॥ अथ वीरुचनं ननु कस्मात्स्व गतमाने स ॥ यत्रो हि नै पुतिगदा नन्दी वचनमब्रवीत् ॥ अथ दृष्टं मया विषु अमर्धं जिवसन्निधौ ॥ केनैका विनं ननु
 न जानामि च किं ॥ ततः पूना धवचनं नन्दिनं ब्रुवीरुदा ॥ येन विष्णु विनं ननु नत्वा दीनां पयेज नै ॥ सपि मूढानसं दह ॥ का र्थी का र्थी प्रमत्त धी ॥ नत्वा ॥ विना न
 करुयात्वा गुरुवच ॥ युरा नं वमया स द्वं गम्यतात ॥ कुवालयं म ॥ नीतीक मर्थ इह स्पष्टः ॥ का र्थी विधमर्ध ॥ ननु कृत्वा उवच नन्दी गगु पूना धस ॥ अथि
 ग ॥ स गुरुन कं दयमा नन वतसा ॥ नत्वा ना गुां यती गायामा रू यवपूना धसा ॥ गतः ॥ जिवालयं नन्दी समं नमरुत्तमो ॥ ततो दृष्टं पूर्वदिनं कृतं नन इनात्प
 ना ॥ यदाला पूजनं कृत्वा नाना तत्तप सिद्धि दम् ॥ यथा पवानसं युक्तं यथा वै का द ज्ञान्तिन ॥ अने के मु निरि मुत्वा गिनी र्जवत्क ॥ ल ॥ सह ॥ ततो यामद्वयं जान

पुनः २ ख ३॥

नमो लिख्ये १४४१॥ अत्राववेन वि। जीविन न धर्मना वि। युक्ति ना सिन सैल य ॥ गम्मा क्कानी हि रा स्या मि। नन्दिन र क वत्सल ॥ ॥ लोमहा द व उवाच ॥ न जाना मि महा रा ग न
दिन धे अ व हि न । त्वं म र क ४ स खा ध नि म हा का ल म हा म न ॥ उवाचि त्रि हि ना थ य । थ व अ व म न स्विन ४ न ति थि या धु म र क । सु वि नि द्वा न रा रु मा ४ ॥ ग व रु क अ य ना ग ४
स च म थि य व रु न ४ ॥ ग व रु क सी क्तो न न । या र्ध द त्व न लं रु ना ॥ ग ता वि मो न नि व रु नि ग रु स मा ग ता न्य व म रा पु र्ण सि । त व । लु हि स वे थ व य उ द्वा त्रि ग र्ण न म हा
पु र्ण ॥ क लो र्ण य व र्ण यो फो वि मा न र्व ग व रु न ४ ॥ सा नू य म व र्ण यो फा वि श्व व स्य म रा स न ४ ॥ नी ना डि नो त्रि त्रि ज या । जिव न स हि नो ग दा ॥ उवाच दं ग ता दे वी पु रु
स ग ज ग मि नो ॥ य थ त्वं हि म रा दे व ग थ तो रु न सै ल य ४ ॥ स्व नू पं ल व ग त्या वा रु स्य रु व ४ स यु डि नं ४ ॥ म या त्व भ क नु या सि न स वि नं सि न सै ल य ४ ॥ दे वी १
सु द्ध य न गृ त्वा कि ना गो र्व थ उ व च ॥ उवाच त्व न या य को ग लो नू उ स धा म न ४ ॥ उ र व य न क यो र्व रु व ग ४ ॥ हि गि ला व न ॥ ग दो द्वा त्रि हि नो नि र्थ रु वा व रु न
मान म ४ ॥ त या क र्ण म रु ग दान वि दि त्व पु रु स न रु व ४ ॥ वा य प न या रु क्क रु व ता न मु वा चि नं ॥ ग दा पु रु ति ना व नो द्वा न पा लो व रु व रु ४ ॥ जिव द्वा त्रि हि
नो वि पाम ४ ॥ नू गि व नो ॥ उ व न नि म रु का लो द्वा व नो जिव व रु नो ॥ उ व रु सो म दा य को न क नु व स दा जिव ४ ॥ नू का रु लि स म रु क म रु का नो रु व रु ता न
थान नो उवा र्ध द म रु क रु द्वा र्ध ॥ नू को र्ण यो क दि ति यो म रु सै र्ण ॥ म रु का ल न म रु सै मु उ द्वा रु व रु लिय ॥ उ व र्ण स रु चि नो द्वा त्रि गि रु नो नो म रु सै नो ॥ ग रु

महा दत्ता

य ३

नमो महा रा ग ४ ॥ गृ त्व नु मृ य था क्क मी ॥ ॥ गे ला द न पु रा पा क जिव ध र्म म न क र्क ॥ पालि ना कृ य था वि या ४ स र्व र्ण उ क्क ता स वा न थ पा पि द्वा अ ध र्मि द्वा अ ध म रु का थ य र्ज
व ४ ॥ क ल रु ना इ रा सान ४ ॥ ग व वा क पि मा न वा ४ ॥ या द ग म्मा ग द ग म्मा थ जिव रु कि पु न रु ना ४ ॥ ग पि ग रु ति स नि र्थ दे व दे व स्य गृ लिन ४ ॥ ति रु ति क म य थ पि
पू र्ण नि वि प जिव ४ ॥ ग रु उ लो र्क ग रु कि ना रु क यो वि वा न व ४ ॥ ॥ ॥ गि शी रु न द पु ना । न क दा न र व । लु । जे व ग म्मा य थ म क्क य ४ ॥ ॥ ॥ ॥ मृ य उ व रु शो लि । मृ य
गि द्वा च क र्थ । नि र्वा का वा पु को पु को र्णि ग मा ग त्व थ ग म हा रा ग य न लु लु धि ना हि न ४ ॥ ॥ लो म न उवा च ॥ य दा दा नू व न लं रु । ति क र्थ या व न नु य रु ४ ॥ दि न स व न म रु क उ र
क ला था । द दान द द्वा रु व न क र्क । स र्ण ग व रु क क याल धा नी । या गी लु ना थ य व म ४ स या नो ॥ ॥ अ र्ण व नी या न म रु ना म ही या न म हा नू रा वा नु व ना धि था म हा न । स र्ण
थ म र्णि रु ली न व र्ण ति क र्क न द नू व न य चान ॥ म धा रु मृ य था वि या । ग र्थ य म ४ ॥ स म ल मा ग ॥ ग दा नी म व स र्वा क मृ वि रा र्थ ४ स मा ग ना ४ ॥ वि ला क य न्थ ४ ॥ रु ना स
धा चू य न स र्ण ॥ का सी रु रु ४ ॥ क नू या च मा ग ना ४ ॥ य र्ध द र्ण न ४ ॥ अ र्ण रु द र्ण य म मा । व र्ण च स र्थि रु ४ स रु ॥ ग थ गि ग द स र्वा क । ग र्थ य । अ न य नू दा ॥ ति क र्थ वि वि
ध । लू रु सा य चान रु ल कि न ४ ॥ पु द र्ण रु कि नं ग न दे व द व न लं रु ना ॥ का चि ति य न मा लं रु । व रु थ वि स या नि ना । क र्ति र्थ ति क र्क । रु त्वा ज्ञा न ना ग म हा म न ॥

य २

कृष्णवर्णः

व० सितसागृक्षवृक्षल० य० भ० छिन० क० ग० की० सहि० ग० ग० सु० न० री० न० द० मा० द० य० न० ॥ उ० व० स० म० म० र्यं० कृ० त्वा० द० वा० त्पु० नि० स० मा० ग० त० ॥ ॥ उ० वि० कृ० वा० च० ॥ लि० इ० स्य० म० सु० क० द० वा० दृ० ख० वा०
 न० ह० म० कृ० तं० । स० मी० ची० न० च० वि० न० च० क० ग० की० द० ल० स० य० न० ॥ वि० ल० ल० वि० म० ल० ल० कृ० यं० स० न० न० म० कृ० तं० । न० र्यं० च० न० म० नी० य० अ० द० ल० नी० यं० म० हा० पु० रं० ॥ उ० ग० दृ० णं० मे० या० दृ० णं० न० दृ० णं० म० दि०
 ना० कृ० वि० न० ॥ उ० कृ० ल० हि० व० च० ॥ सु० ना० वि० स० य० मा० य० य० ॥ उ० व० वि० स० य० य० लु० सि० ॥ लु० या० दे० व० ना० ल० ॥ गि० र्यं० गि० ता० च० त्पु० र्यं० वि० स्रु० त्पु० र्यं० त्पु० र्यं० क० ॥ या० ना० ल० द० ग० न० ॥ स०
 य० ॥ स० र्व० यो० म० व० द० ल० व० न० । अ० स्या० यो० र्क० न० दृ० णं० व० मे० ला० क० ने० त० ल्य० न० ॥ वि० स० यो० म० मे० हा० जा० न० ॥ या० ना० ला० ल्य० न० ॥ अ० न० ल० स० ग० ल० च० ॥ वि० वि० न० ल० च० न० सा० ग० ल० । न० थ० ग० न० स०
 ल० च० व० या० ना० ल० अ० त० ला० त० ल० ॥ न० ला० ता० ला० न्व० वि० ता० न्यं० व० लु० न्यं० या० च० द्वि० लो० कृ० तं० । लु० न्या० द० वि० च० लु० न्यं० त० त्पु० र्यं० स० नि० री० कि० र्णं० ॥ न० म० ल० न० च० म० ध्यं० च० न० च० को० कृ० स्य० वि० श्र० न० । नि०
 ने० त्रु० यी० म० हा० द० वा० यं० ने० दं० ध्यं० यं० भ० ज० ग० त० ॥ य० स्य० य० सा० दा० इ० त्य० न्ना० स्य० यं० च० वि० श्रि० ॥ स० ह० । स्तु० व० न० जं० ग० मे० थ० दं० जं० ग० ल० ल० च० वि० स्रु० च० ॥ यं० ने० दं० का० वि० न० स० र्व० य० त० ॥ स० र्व० य० नि० श्रि० न० । य० स्य० न०
 ध्रु० वि० न० य० यो० र्क० त० लि० इ० मी० पु० न० स्य० च० ॥ क० ल० व० स्य० च० व० लु० त्वा० उ० कृ० ला० के० यि० ना० म० ह० ॥ उ० वा० च० सु० वि० श्रि० ॥ सा० की० व० द० वा० द० न० ता० स० दा० ॥ द० वा० ना० य० न० भा० कृ० मि० स्तु० वि० श्रु० ॥ य० न० भा० म० न० ॥ ग० द० ने०
 न० ल० द० वा० लु० न० नि० व० द० न० ल० स० न० ॥ लु० लु० रं० ना० ह० लं० दृ० णं० म० नी० या० द० क० स० नि० र्णं० । त्वं० क० स्मा० द्वि० स० या० वि० श्रु० ॥ स० र्व० य० वि० कृ० म० ह० सि० ॥ त्व० या० न० दृ० णं० म० लं० ॥ अ० स्य० नि० ग० स्य० वा० ध० ना० ।
 उ० ना० व० लि० यु० मा० ली० स्या० ध० च० ना० रु० व० स० य० न० ॥ अ० स्या० की० हि० म० या० दृ० णं० ना० ग० का० र्था० वि० चो० न० ल० ॥ उ० ह० स्य० च० न० दा० वि० श्रु० त्पु० वा० च० क० म० लं० द० णं० ॥ म० या० न० दृ० णं० म० लं० च० म० सु० क० च०

१२

त्वया कथं ॥ दृ० णं० न० र० मि० श० उ० कृ० न० का० व० र्णं० क० थं० य० म० ॥ त० दा० ल० गु० न० वा० च० र्दं० वि० श्रु० स० र्व० लु० न० लु० न० । उ० कृ० ल० नि० मि० र्मि० तं० थ० दं० अ० र्धं० मे० ग० दृ० वा० च० रं० ॥ त० स्या० ल्यि० ता० म० हा० कृ० ता० । स० र्व० यो० म० यि० त० त्वं०
 ग० ॥ ग० थ० स० र्व० यि० मृ० य० य० स० स्य० वा० अ० म० य० ऊ० य० न० ॥ त० दा० वि० श्रु० न० वा० च० र्दं० उ० कृ० लं० ॥ उ० ह० स० नि० व० ॥ ॥ उ० वि० श्रु० न० वा० च० ॥ दृ० णं० हि० व० ल्य० या० उ० कृ० न० । मे० सु० क० ॥ य० न० मा० र्थं० ग० सा० कि० ल० ॥ क० ल०
 या० ग० उ० कृ० मि० न० र्थं० य० क० ल्यि० ना० ॥ अ० क० लु० वि० च० नं० वि० श्रु० उ० कृ० लो० क० यि० ता० म० ह० ॥ उ० वा० च० त्वं० नि० न० व० क० ग० की० म० त्रु० री० नि० च० ॥ त० दृ० च० म० म० सा० कि० त्वं० जा० नी० हि० य० न० मा० र्थं० त० उ० कृ० ल० हि० व०
 च० लु० त्वा० । स० र्व० द० वा० लु० ना० मि० ना० ॥ अ० कृ० न० च० कि० न० ग० स्या० ॥ म० ने० र्था० ग० या० स० दा० । अ० ग० ना० ग० कृ० ल० धं० व० का० यो० र्थं० उ० कृ० ल० स० दा० ॥ ॥ लु० या० अ० श्रु० ग० थ० द० व० न० का० च० स० न० री० त० त० ॥ उ० वा० च०
 क० ग० की० सो० र्वं० दृ० णं० व० उ० कृ० ल० सु० ना० ॥ लि० इ० स्य० म० सु० क० न० न० । ना० ग० का० र्था० वि० चो० न० ल० ॥ य० य० सा० च० म० दी० थं० न० । स्य० न० त० स्य० म० र्धं० नि० । उ० र्य० हं० कि० य० ना० वि० श्रु० क० ग० की० द० ल० य० ऊ० न० ॥
 त० दा० न० र० ग० ना० वा० ली० । स० र्व० यो० लु० पु० ना० म० ह० न० ॥ म० ने० र्था० च० व० न० ल्यो० क० क० ग० अ० च० ग० थ० सु० ना० ॥ त० न्मृ० यो० की० हि० जा० नी० हि० धु० न० दृ० णं० अ० स्य० म० सु० क० ॥ त० दा० स० र्व० च० वि० श्रु० धा० ॥ स० दा० व० वि०
 श्रु० ना० स० ह० । ना० क० य० म० ने० री० ना० आ० न्मृ० वा० वा० दे० न० त० ल्यो० र्णा० ॥ म० र्व० भा० क० त्व० या० अ० व० म० न० ग० च० न० थ० लु० रं० । अ० य० वि० र्णं० म० र्वं० त० स्य० स० र्व० ध० म० व० हि० ॥ कृ० तं० ॥ स० ग० ल० क० ग० की० या० यि० श्रु०
 यो० अ० ल्पं० नि० वा० च० न० । र० वि० श्रु० मि० ने० र्मं० द० हा० ज० न० ना० च० व० रा० मि० नि० ॥ त० दा० न० र० ग० ना० वा० ली० । उ० कृ० लं० च० ल० ना० य० र्थं० ॥ मृ० यो० क० च० त्व० या० म० न्द० म० द० र्थं० वा० लि० ल० त्व० या० ॥ लु० लु० ल०
 मृ० वि० श्रि० सा० की० । त० थं० व० च० य० ना० ध० सा० । ग० स्मा० धू० र्यं० म० य० अ० धू० रं० व० थू० ॥ ल० थ० र० नि० न० ॥ मृ० य० या० वि० च० ध० मि० श्रु० । स्तु० त्व० वा० अ० दृ० हि० ॥ कृ० ता० ॥ वि० वा० द० नि० न० ता० मृ० दा० अ० न० त्व० कृ० ॥ स० म० त्पु०

कनकवती॥

[illegible]

सर्वरुगाना. मकाङ्गनिनिवेधसं॥ सर्वरुगानियस्माच्च. गस्मात्सर्वसिनिह्यसं॥ यस्माच्चसंरुवन्धव. गस्माच्चसंरुविगियरा॥ तत्त्वादयंकुंउाका वर्यसर्वसुवा सुवा॥ पुषयादव
नेर्धसो. विशाधनमहावग॥ गस्माच्चययालुको. याकस्माच्चजगत्पन॥ ॥ अमेहादेवउवाच॥ शुण्डसुवयामयजियगचित्त्वानिग॥ विष्णुसर्वयार्थयन्तुत्विगननगयाना॥
गत्यगद्वचनपुत्वालकनस्यमहात्मन॥ विष्णुसर्वनेमस्तुत्त्वोतिनचतदासुवा॥ ॥ देवाउउ॥ विशाधनासुवगभपुषयश्चसर्वगागात्वमुशसकलाजगदेकवस्त्रा॥ गत्येवस
वीन्यवियालययाद्युताकुनाथेसिजगनिवासा॥ अहस्यरुगवानविष्णुनवाधदवचसुदा॥ देह्यययीतितांयुयनदिगाप्रयनामया॥ पुष्यवरुयमेत्यन. तिगादस्माच्चिनागना
गाननयममयागु. गस्माच्चिनागयात्सुवा॥ अशुमनेवमकासु. देवा धिनायनासुदा॥ गदानरोगगावाणी. उवाचयप्रिसत्त्वियन॥ ॥ गन्निगसंवृणुश्च. शुजनायजनाईनायि
लीरुत्वामहावाहा. नृकस्वसेववाचन॥ गत्येतिमत्वातुगवानयिगायुयमधीनयन॥ यिठिकाविष्णुयीत्या॥ अनेनूयीमेहधन॥ गस्माच्चिनाचने. एव. सर्वयाम
यिदेहिना॥ गत्येतिगस्यरुगवानवीनरुडात्ययुजयन॥ वक्रादिरि॥ सुवगले॥ सहिगसुदा नी. संधुजिग॥ निवविधानयातामहात्मा॥ जीवीनरुड॥ गानि
खयासा. लिवयिथापुदसमसिताके॥ तिङ्गस्याचनेयकासो. वीनरुडातुवरुदा॥ गत्ययस्यलि. गत्येययनसर्वमिदजगन॥ उहानिहिनिमाधानि. गथावि
लयमनेव। गन्निगसिङ्गमित्याक लयनाकस्वविरुमा॥ अक्रापुर. गलेकशार्क. गथापुडादकटविरु। गथासिङ्गमहजग. सर्वयडिनिगजर्म॥ गथासर्वधवि

कदाचिदु ॥

वक्षः सुखयावमहयुगाः॥ उद्युवसुसदालिङ्गं वदवाद्यः युथकपुथकाः॥ अलानलीयार्हदवाधयिहनामहान॥ गस्मान्त्वयाविधागर्थं सर्वथा लिङ्गयुज्जमं।
गदानामवसंभलं तन्निर्गवद्गोचरे। सत्यवक्षः पुनर्लिङ्गं वदुःखं महोलिङ्गं। अमरं पुनर्लिङ्गं मन्वावर्त्ययुनिष्ठिगमावेन। लघुर्वचवात्रयोः याम्याकाले पुनर्पुन
॥ नमृगं लघुर्नमृगं वायथायावने पुनर्॥ कोर्वपुनर्कोवथामीलन्याचिमहपुनर्॥ कंदारं मल्लोकावत्। गथेवचामर्पुनर्॥ उकारं नेमदायचि। महाकालं गथेवच। का
विष्णुपुनर्दर्वयुया। गतलिङ्गपुनर्॥ शुभकं वेवक्षनित्रो। कालरुदपुनर्गथ। जाऊनामपुनर्लिङ्गं गङ्गासागरसंगमं॥ सोवाक्षुवगथलिङ्गं। सामपुनर्मिगिस्मृगं॥
गथसर्वपुनर्विच्छे। जालेन लिखनं पुनर्॥ कात्यामनालनाथश्च। सिंहनाथश्च सिंहव॥ विनूयादगथलिङ्गं। कोटिर्नकवर्मेवच॥ गियुनोनक। अलीमर्गं उमर्पु
नर्मेवच। ला। गपुनर्वचयाताल। हाटकपुनर्मेवच॥ उवमादीन्यनकोनि। निङ्गपुनरुवेनगर्थ॥ नेयालंयापुनर्लिङ्गं। सोमपुनर्मेवच॥ कृषिगानिगदादवधिष्णु
यकृतिरुगव॥ लिङ्गं। लेपुनदासर्व॥ युजुमासीरुगर्थ॥ गथाचवीनरुडोल्ह॥ युजार्थममर्प॥ वृगा॥ चत्वारिङ्गिर्सत्काक्षामष्टाधिकास्तथा॥ कथिगालङ्कनं। वे
वर्त्तिनस्याज्ञेनयुजका॥ स्यादुडेलनकेथिता॥ लिवधर्मसनागन॥ लिङ्गस्य महिमो नू। नदीजानानितत्वग॥ गथात्का। न्दीहिरुगवानअन्यतनामधात्रका॥ यथ
कालिवधर्माहि। नदिनायत्रि। कोटिगा॥ लेलादनमहाकाग। विविगलिङ्गधनका॥ पालम्यायत्रिलिङ्गश्च। धियनचयुनामेशर्त्ति। गनेसहयचत्वं। लिङ्गनसहजीवन॥

[illegible]

20

15

कृष्ण रात्रि ॥

अर्चयि विवाजाना मि न कर्म मां कर्तुं विना ॥ मृषि रुद्र च नैश्वर्या मनसा च विमृशय ॥ अनया किं कर्तुं पूर्व कर्तव्यं कस्य पुसाद न ॥ गदा कूर्तुं कस्य विना तत्सर्वं ज्ञानव
 दूषो ॥ विस्मयेन समाविष्ट सूर्यो रोगा रुद्र रुद्रा ॥ स विस्मयो रू द थ ग द्वि दि त्वा ड द्वा ल का ज्ञान वगा म्ब नि ॥ गिव पु र व म न स ॥ वि वि न्द ज्ञाना त्प नै वा ध मा वा य सा
 पि ॥ ॥ ॐ नि जी क्क न्द पु न ॥ ले के दा न र व ॥ लु जे व ज्ञा र्क स फ मा क्षय ॥ ॥ १ ॥ ॥ लाम ज ड वा य ॥ ग र्क थ ॥ पि पु न ॥ व द्ध न स र्व ध र्म व र्हि ॥ कृ ते शा व क्रो धा सो स
 त्रा य स्व स व लु स्य च त र्क न ॥ ल म्ब ण हि म हा पा प ड र्म म क्कु सु स र्व दा ॥ धू त काना स दाम न्द ॥ कि न वै ॥ स र्म गे ग ॥ न क दा की णि न नै न हा नि ग य म म ॥ ॥ कि न वै ॥ ध
 मा ना हि ते दा ना वा च किं व न ॥ पी णि ग थ र व र्क धी नै वा के ॥ पा प क र्म म ॥ धू त ल या रु नि स दं ग ॥ ग ड्ढ किं पु य द्धु सि ॥ ना वा ग ल्क थ र्ग गी र्धु य थ र ॥ ध न इ र्म न ॥ य
 द्वा त्रि नै पु य द्धु मि ना गु वि ल्य व वी द्ध च ॥ र्म क्क म् न वा क्क न ग ना र्क कि न वा द य ॥ ग दा नि जी थ स म यं ग ना सो गिव म नि र्ने ॥ वि ना र्ने रु रु क मा वै गिव म र्क क मा न्द रु ॥ वि
 ता र्ने स र्म व र्ध या व मा य य नी ति स ॥ स ड्ढ ना ष म हा दे वा वं क्क न्ये रा व न श क्क न ॥ अ न न क ग म यै व र्क दे न य पु ज न म ॥ क वि नै र्ग पु य द्धु किं के वि द्धु क्क न थ पे न
 ॥ गि ना र्क ॥ क वि द्धु ग ॥ धू ज न् वा स म व ग ॥ अ न न य क्क न् क र्म स र्व धा म धि क र्क रु वि ॥ स र्व धा म व र्क नां व नि श्च यै व न पि य ॥ ॐ नि म त्वा न या मा स वा
 न रु डा दि रि ज्जि ले ॥ स र्वे त्वा नि गा ड्ढ म् ॥ के ला सा क्कि व व ल्क र्णो स र्वे ॥ म न्ना दे न ना दि न् रु व न ग य ॥ ग न्द द्धु सो कि र्म म रु ग र्क नो सो इ ना त्म वा न ॥

३२

११

10

5

लिङ्ग स्य मरु का त्म य ॥ य ला य न न प ना रु व न् ॥ य ला य मा न नै द्ध वा वी न रु ड ॥ स मा न य ॥ क स्मा हि रु पि न म न्द दे व दे वा म र्द श्व न ॥ स स न रु व ज ना य ड्ढ दा
 न य नि ना क्क सो ॥ पा र्ध दा हि क र्क र्क न ग र्क न ग र्क ना हि म हा त्म ना ॥ ग स्मा रु वा जि व रु कि ॥ स र्व धा म पि द हि नी ॥ प ग वा पि हि पू का ॥ स्य किं पु न र्मा न वा रु वि ॥ य ना किं का
 र्क प ना र्क थ मी मां स का य य ॥ अ न्ना न्द वा दि न स र्वे न थ न्ये वा त्म थि न का ॥ न र्व वा र्क न क र्क नि शि वा र्क न व र्हि र्म र्वा ॥ ग र्क हि कि य नै यै य स र्क ल किं शि व वि ना ॥ ग
 थ किं व रु नो क्क न पु स र्वे कि न ज र्क मा ॥ पा वि ना पि हि जा य र्क के व लं लिङ्ग थ नि ल ॥ पि लु य र्क न थ लिङ्ग क्क पि न थ य थ रु व न ॥ ग थ न ना लिङ्ग य क्क ॥ पि लु र्क ना र्क थ लिङ्ग य ॥
 शि व ग क्क य र्ग स र्वे ड्ढ ग दे ग व्वा न व न ॥ ग शि व र्क न ग ॥ क्क ल्क र्क र्क थ नै र्क रु कि य ॥ ध र्म मा र्क किं के रु र्क नै श्व र्क क ल रु र्क न ॥ या वि ष ॥ स शि वा र्क या य ॥ शि वा वि ष न व य
 ॥ पा णि का वि ष नू प ॥ स्य लिङ्ग नू पी म र्द श्व न ॥ ग स्मा लिङ्ग श्व न ॥ थ र्क स र्व धा म पि द हि नी ॥ वि ष म ती म यं लिङ्ग पू ज य थ नि र्ग गुरु ॥ ॐ ज्ञान त्त म य लिङ्ग र्क व न्द म् क मा म य
 न्क थ ॥ ग न्द स्य म यं लिङ्ग पू ज य थ नि र्ग वि रु ॥ यो य लिङ्ग क्क व न्द य पा नी ॥ अ न क म व व ॥ य मा नि ल म यं लिङ्ग न ज न नै र्म नि रु थ ॥ क शि र्म न य व न लिङ्ग म र्क य थ नि श वि
 रु ॥ न र्व नै लिङ्ग ना ॥ स र्वे ला क पा ला ॥ स वा स वा ॥ ग थ स र्व पि ल य पा ना ल ग न्द वा ॥ कि न नै ॥ दे वा नां व र्क वा ॥ क वि लु द्ध द म् र्क र्क वा द्वि ज ॥ ग थ हि ना र्क स ना अ वि र्क
 ष ल य र्ग ग मा ॥ व लि श्व न म वि श्वे व र्हि न थ के शि प र्म थ ॥ व ष प र्क वृ ष ॥ व र्क र्क दी ना म ग र्क थ ॥ न र्वे वा न्द व र्क र्क ॥ १ ॥ क स्य धा म ग ॥ न र्वे शि वा र्क न न ना

११

0 CMS 5 10 15 20 25 30 35 40 45

कदाच
खनु॥

दासकलं देगादेगमवायह ॥ देगादेगविर्वका (र्थ) अयथा अगमा हिगा ॥ गत्सर्वथा प्रवक्तुं ह निवार्थनवगानना ॥ अर्थय नि निर्व निर्य निद्रवृयि लभवच ।
 मिथोवायथवा नु जालयचा अन्तक सिन ॥ ग निर्वया प्रवक्तुं व सघड ॥ खाय नान म ॥ यल वा धिय वया ना ॥ किं न नमनि वा दय ॥ अ द्विजा वस्य च र्थ ल नय ॥ यन
 ममा क्लिना ॥ वधे ने न के अज्ञाना न विस्वयना सु दा ॥ अतिश्रमा वा जयथा अग्निना गुदथा अमी ॥ यद्वा ॥ स्वर्ग्ये य च्छुति मनिना नग स नय ॥ गगुस्वर्ग सुखं
 क्वा यूप्रकथय कर महन ॥ यूप्रकथय यज्ञाना मेरु सा कय ग निवे ॥ यगिगाना अं स सा न दवा वृद्धि यजायत ॥ गुल गय मया विद्या सा सुगा स्त्री हथा निवे ॥ यथा स
 ले स र व नि सत्वय को सु दो न ना ॥ राज सा धु न थ र्था सु म धे व ग द्विजा ॥ उर्व स सा न य क्स्मिन् अ मिगा व ह वा ज ना ॥ यदृक् अ देव ग ला निर्व स स व ग ने
 ना ॥ निव धा ने य ना ले ॥ उ न ना ल्प य ग थ ग सा ॥ माया निव स ना स धा र वि श्र गि न वा म्प था ॥ माया निव स ना स धा र न न्प ग न व गु ल ग य म ॥ य दा गु ल ग या ती ना र व र
 गि स म् कृ ता क ॥ ग म्मा विद्रु च्छ न रा र्थ स ध्वा म यि द हि ना ॥ लिङ्ग वृथी लि वा र त्वा गाय न स व ना च ने म ॥ यु ना र व दि ॥ यृ धा ह सिद्रु वृथी क थ निव ॥ गत्सर्व
 क थि नु विद्या यथा धे न म यु गि ॥ क थ न र र कि ग वा न निव ला क म ह पु न ॥ गत्सर्व पु न विद्या यथा व ल्क थ या मि व ॥ ॥ नि ग्ना स्त द य ना ले क्वा न
 खनु ले व ना सु अरु मा धा य ॥ ८ ॥ सो म न उ वा च ॥ उ क दा स ॥ स रा म धे ॥ या क्ति ना दे व न त्स्व र्थ ॥ सा क या ले ॥ य नि वृ ना दे व प्र मु ख रि क थ ॥ अ य ना ग ल स वी ना

२३

गन्धर्व प्रय विष्णु ग ॥ उयगी य मा ना विजय ॥ सिद्ध विद्या धने व यि ॥ गदा ले खो ॥ य त्रि वृ ता द व ना ज गु न ॥ सु धी ॥ आ ग ना सो म हा रा ग वृ ह स्य गि नू दा व धी ॥ ग
 दृष्टा सह सा द वा ॥ य ल म ॥ समूय क्लि ना ॥ ०० न्द्रा यि द द (ले चा) गु नु र्वा च स्य गि न दा ॥ ना वा च कि वि द्रे म्प धा व चा मा न य व स म ॥ ना क्क र्ना ना स ने ग स्य न वि स क्क न म
 व च ॥ ल क्क उ म र्क ला ता थ मे दा डा अ स्य इ र्म ति ॥ ति ना धा न म न पा क्क वृ ह स्य ती न्द्रा चि न ॥ ग न द व गु री ग स्मि ने वि म न क्क त्ता दा सु ना ॥ य द्वा ना ना ॥ स गे म्प वि ष्य आ यि न धा
 द्विजा ॥ ग न्ध व स्या व सा न गु ल च्छ र्म र्म ति ॥ य पु क्त व नि र्म ने व क्क ग ना हि म हा ग या ॥ ग द व ना न द नी क्क ॥ ल क्क द वा धि य स दा ॥ त्व या क्क ना क्क व र्वा च पु न ना त्ति ग स
 ल य ॥ गु ना न व र्वा ना र्थ ग र्ग ने व ल सु द न ॥ ग म्मा ग्क मा य नी या सो स व र्ग व न हि त्व या ॥ उ ग क्क ता व च स्य ना न द स्य म हा त्म न ॥ अ स ना त्त्त ह सा क्क य ने ॥ स ध्वा य वि वा वि
 ग ॥ अ ग क्क न त्व न या ल क्क गु ना ॥ ग ह म र्दि ग ॥ दृ ष्टा ना वृ य ल म्प था ॥ क्क ग ना हि म हा ग या ॥ न जा ना मि ष्ट वा च द ना ना ल क्क नि री क्क नि ॥ ग दा चि क्क नि ना र त्वा ल क्क ॥ स वृ मा व ज ना ॥
 व नी ॥ ग दा य द्म म नी वा सी द्ध ना दि ना न वे ॥ सह दि वा ॥ य ना जि ना दे य ॥ ना र्थ ल क्क स्य ग न क्क ल म ॥ स क्क डे स क ल ग स्य मृ द स्य इ ना त्म न ॥ नी ग स ध्वा य य न ने न या ना
 ल त्व वि र्ग न ग ॥ ल क्क य सो दा ह स ध्वा त्थ वि ज य ना र व न् ॥ ल क्क नि ॥ गी व उ वा सी द्ध वे स्य क्क स नी र्क ॥ स च गि ना धा ने ग ना व र्वा व क म ल क्क ॥ उ ना व ना म हा ना

क

कदाचिदु ॥

[illegible]

नारायणं कुरुतां कारंस्कृतं चैव महापुरुं अभिकनत्रसंवीगं तानाडुमनिधविगम ॥ चन्दने ४ यात्रिजानेधु, नाना यन्त्रागवम्यके ४ नाना मृगगणकीर्णु, सिंहसाईलमवि
गम। यदुकिन्ननगध्वे ४ यविनें समभावनम ॥ ७४ विधिमहालेलं दृष्टुं मसुप्रसरुमा ४ ७५ ४ या ७६ लय ४ सध्वं गदानयव्वगोरुमम ॥ ॥ ४६ वउच ४ ॥ ७७ ४ सुवाव
यसध्वं विरूयमिहमागना ४ गधुपुधुमहालेल, यत्रयामियकात्रक ॥ ७८ मूकसुदालेलादवेदेले ४ समन्दन ४ उवाचयुगुगोरुत्वायव विगुहावानेवच ४ गनय
नयुयीस ४ यव्वगामन्दनाचल ४ ॥ ७९ किमर्थभागना ४ सध्वं मत्समीथगइयुगा ॥ गदावलिनूवावदं, येसावसदृणवच ४ अमृगीत्यादयस्या ॥ ८० त्वंमत्करुवसुचन ॥ ग
थनिमत्तागडाऊं दवानाकार्यसिद्धय ॥ ८१ दवाअसुवा ॥ ८२ न्युयुगिविगयग ४ केदिगाचत्वयायुकोत्वजलहित्वयानघा ॥ गनृकथसमर्थ ८३ ॥ रुवगाका
यसिद्धय ॥ गदादवासुवा ४ सध्वं मृगमानामहाचलम ॥ ८४ दयययत्रुलं मन्दनचनगाडुगं ॥ ८५ दवापुर्वनं रुकामाअमंलकासुगदोरुवग ॥ ८६ यव्वग ४ यनिग ४ स
आदवदथायविधुव ॥ ८७ विडुगमृगां कचिने, कचिन्मृगीयगारुवत ॥ ८८ विवादना ४ क चित्केचित्केलत्वमागना ४ ८९ ४ रुगुगुमाजागो ४ सध्वं मसुप्रदानवा ४
॥ ९० गनाययमायाया ॥ ९१ वृजुगदीपुनमं ॥ ९२ वृजुगमहाविधु ॥ ९३ वृजुगगवत्सल ॥ त्वयागनमिदं सध्वं ॥ ९४ गमाजगमचय ॥ ९५ दवानाकार्यसिद्धय ॥ ९६ दवा
विसुदा ॥ ९७ गनृदृष्टसहसाविधुगनृगायविमंस्किग ४ लीलयायव्वग ४ ९८ मन्त्रम्यागयगत्कण ४ गनृत्तमिगदादव ४ सध्वं यामरुयंददो ॥ ९९ मृत्कथगदाद

कदा न वृत्ति ॥

[illegible]

न३

वी

५५

वयनाहमूखाशकवलाद्यमसंरंताममल्लः दीनसागरम॥ अग्निनिर्मलनाडागादीनाश्च हलाहलमाणे लास्यदहनं योरं आदहनं दिवोकस॥ अधुर्द्ध दिनेः सर्वथायं
हृत्तनेरुमलम॥ मिश्रं सवेरुतानां कोलकूटं समथगम॥ दृष्टवहर्न स्वकनसुमाजसां न सथनजं सहयवतन॥ नगवदि त्वायिसूनासुदानीं यलाद्यमानाश्च
सूत्रं समंतांशं तथिवमधुमयल्लुप्यथाः लनसंस्तनं ददस्ययजनं नयं यथजागं तथा रुचन॥ सथसाकं गतां सर्वं लुप्यथादिताल्लम॥ वेदवाश्च विविधैका
लकूटं युगम्यानि॥ उक्तानां स्वरुसंदहः सथसंथविदामिव॥ लुप्यथाकं वच॥ कालकूटं रुयादिनां सथसाकं चर्मयोका जूसूत्रां सूत्रदानवां तावत्तं वाम
गुणकालकूटं संयुक्तिर्न सथसाकं समगम॥ सुवसां दाहिर्नं नं दानीं जादाल्यमानं युरुयाडुगं ॥ अग्निना सथसाकाश्च निग्नगायि विनामह॥ सथसाकं
चनलेः यनोयलयनारुचन॥ नदोर्नवक्ते लदृष्टाश्च कर्मरू॥ सूत्राः सूत्राः नयानि यिमालश्चानावदतु निवोत्रित॥ ॥ उक्तावाय॥ अकार्यं किं कृतं दवाः कस्मा
नक्षत्रायमूयन॥ लुप्यथाश्च वजागाश्च नान्यथाममलादिनां ननायवै यत्रिवृता वेदायनिअदं सह॥ नानागमं सूत्रगीतं कालकूटं रुयाद्यो ॥ नगलिना
वितायवा दमूच॥ यत्रस्यत्रम॥ अविद्याजालसंवीनां कूयामि॥ लकूटं च किमा उक्तां च यत्रस्यत्रमदादवास्त्वगुचितां वेकूमावजुनसंवेकालकूटं रुयादिना
॥ उक्तादथा मुचिने लप्यनदायनं विव्यूनालयनूयं विव्यूमीनम॥ वेकूमानि लयमधो कजमाधवर्नं सर्वसूत्रासूत्रगलं नगर्न विजोनां तावत्तं दालं नं सूत्र

५१

कदा न खलु ॥

[illegible][illegible]

24

विजागृहसंगानकसुदा। गांडुमानकगः कृत्वा गंधर्वानगनायमान ॥ मर्मथुर्गत्वनिगाः युनं द्वावा पुर्वसूना ॥ निर्मथुमानाददधेनरावत्सुर्थवर्षसं। यत्नामासुर्म
नर्त्तकोमृतेरथमहत्तरं ॥ स्वकीयसूयकाः नरासयनजगुरुयम। चित्तमलियुत्सुत्य कोमृते देहलिय ॥ सर्वसूनादइसुर्वकोमृते चित्तवगदो। चित्तमलियगः कृत्वा
मध्यवतदासूना ॥ मर्मथुयूनयवाधि गजगसुवसात्कटा ॥ मथमानासुगसुसादु ॥ वसेमडुतं ॥ ददणनवनत्तानां युनलुनावेगगडं। तथेवगजवत्तर्गचतुःषष्ट्यास
मन्विर्ग ॥ गजानां यालुलानां च चतुर्द्वर्गमदान्निर्ग। तानसर्वानमथगः कृत्वा युनयवमर्मथुय ॥ निर्मथुमानाददधे निर्गगानिवदुन्यथ ॥ मदिनाविठयर्गनासुथलुनगु
जवा ॥ मृगीवउन्मादकमधुसूय ॥ युनयवसुथ ॥ सुयिगान्यके यशनगीनेनदनदीयथ ॥ युनयवगगुमहासुयन्दा मर्मथुयविसुयनाकमे ॥ मड ॥ निर्मथुमानाददधेनरावत्सु
त्मादिशुलेक्षी गवनेकनाथ ॥ आन्दिदिकवक्रविद्योचयं निगथचान्मूलविद्यालुधुनि। वाग्वेकविद्याकचिदाहुः समथकचित्तिद्विं मृद्विमाया मलुथ ॥ यावैवृवीया। ग
न ॥ कचिदाहुः गथचमायामयिना नियुक्ता ॥ वदनि सधनेकसिद्धनेयुकायागमायाङ्गाननगुनिगान् ॥ ददणुसुमिहालक्ष्मीयायागाननक ॥ सूना ॥ गोनीयय
वनीस्त्रिया ययकिजल्लुठयत्तम। सुमिगां मृद्विजाल्मामनवशोवनलेषत्तम ॥ विचिगवसुगवत्तम ॥ यत्नान्यकाशयगं ॥ विस्वाष्टीं सुनसितान्नीं सुगीवाचान्नाचनीं
॥ सुर्मथुयान्नायनां वृहत्कटिगटनेथ ॥ नानावत्तयदीययुनीनां जिनमूर्त्तावृज ॥ चान्यसेनवदनां हावनूयवत्तम ॥ मूर्त्तनिधियमानेनेकगुणयिचिना

कदाच
खलु ॥

जिगी ॥ यामने विष्णुमानं च ॥ गंगा कलाला निगे ॥ यालुन गजमानां सुयमानां महर्षिणि ॥ सुनदुमययमाला विनतीं मन्त्रिसंयुगां ॥ कना ॥ एधिया मां पां गां
दृष्ट्वा दवां समुत्सुका ॥ आला कनयना यावद्ववास्तु दृष्ट्वा ॥ अमी ॥ देवां प्रदानवां ॥ अथ सिद्धयानेन नगेन ॥ यथा मां सा सुयुगं ॥ महासुखी ॥ गथासगी ॥ अबला कि
गायदादं सुदील ॥ अलिना निगा ॥ संयता न न के ॥ अथ वना सुले कलाल किगा ॥ निगी कदाने वाजागा ॥ यलिया नावला किगा ॥ निगी अमाना नदा मुयं दं ॥ गमालनील सुक
आलनामं ॥ विजाजमानं वययाय वलुनी वत्सलं ॥ सुदया वला किगा ॥ दृष्ट्वा स देव सह सावन मालया निगा ॥ लक्ष्मी गजदुवगगा वसु विस्मयं ॥ क ॥ ० समर्ज येन वसु ये
यस्य विष्णुमाला ॥ गिया विव विग निमनेन यगा ॥ वामा न्ना मालिय गदा महात्मने ॥ साया विन क ग समी अ न उरी ॥ सुन विदवी म द माये सुकदा ॥ सिद्धा यना ॥ किनेन यान
अ ॥ सुधुवां म वला काना ॥ एक यथु न सुधुवे ॥ हर्षा म हान रु रु ग ॥ लक्ष्मी नायाय लभे ॥ लक्ष्मी वृत्ता महा विष्णु ले ॥ सुन व स वृगा ॥ उर्वशी ला अ वेला के न गत्यो ॥ ग्याय
यहो ॥ एव सुदक्षाने क ॥ गमखा ॥ रुथे व ॥ रुदना क स लक्ष्मी सुमला रु वे न ॥ वरु व ग यका नां च ॥ गेय नं सुम ॥ हलु दा ग गानि विगना न्य वे घना नि सुखिना लिच ॥ उर्ववाद्य
पुरु दे प्र विष्णु स वी त्मना हवि ॥ अना ययन सुनी गिगा ॥ धर्वा यन मा ग ॥ अ ॥ गने ॥ ये व न नान द रु व ना द यो ग ॥ सुव यका ॥ सुन सिद्ध संघा ॥ स संव मा नाय न मा त्म नू य ना ना
यदी द व म ग धवाध ॥ ॥ निगी सुदे यना ॥ कदा न खलु ॥ नि व ल ॥ सु की ना द्वि मथ न लक्ष्मी ॥ एक न ग क ध न ना म न का द ॥ अ ॥ य ॥ ॥ ॥ लो म ल उवाच ॥

३५

यच मयुन मान न्द न माय क जना हर्ष ॥ अमृता र्थ मर्म थ सु सुना सुव ग ॥ य न ॥ द द ध म थ माना च ॥ निर्ग न ॥ सु महाय ल ॥ धन्व न वि वि गिरा ना य वा मृ त्यु ज य ॥ य न ॥ या लि
रुयि यु क ल नी सुधा या ॥ य वि गृ थ ॥ या व त्सु सु ना र्थ वे ॥ निगी दं न मा ह न ॥ गा व द्वा ॥ समा ग ल ध रु का मा व ला दिव ॥ सुध या यु क ल नी धन्व न वि क न स्ति नी ॥ या व
रु न ग मा ला रि वा व ना रु डि अ द म ॥ लु ने ॥ ल ने ॥ समा या भा ॥ धु ना सो व य य वे ॥ क न स्तु ॥ क न ल सु स ॥ द न स न व ला दिव ॥ अ र्से ना प्र ने ग ॥ स र्धु ज ग र्ज न रि ती य ॥ क ल
नी सुध या यु क ल नी ही त्वा ने समुत्सुका ॥ द्वा ॥ या ना ल मा ज म ॥ न दा द वा ॥ ल मा नि गा ॥ अ न ज म ॥ खि न्नु म्खा ॥ ग ह य न य व स्ये न ॥ यु क ना न ग ना दृ ष्ट्वा ॥ ग थ ॥ द वा नं स मे
न त्म को ना व लि म्खा ॥ सु स ने द्वा ॥ य यु त्म वा क व न व च ॥ ॥ व लि न्वा च ॥ यु र्थ स र्धु क ना थ ॥ जा ता न त्र य वि क द ॥ व य रु क व ल द वा ॥ सु ध या य नि गा वि ना ॥ नी धु म व यु ग ने र्थ
र व रि प्र सु ना र्थ म ॥ रि वि ष्ट य म दा य के ॥ कि म स्मा रि ॥ यु या ज न ॥ यु ना स्मा रि ॥ क र्ण ये च ॥ सु र्धु स्वा र्थ य न ॥ स ह ॥ अ ध ना वि दि ग न नु ॥ ना रु का यी वि चा न ॥ उ र्व नि रु ति ना सु न व ति ना
सु न सु क मा ॥ य थ ग न न मा ॥ गे ॥ या व न्ना य र्थ यु ॥ नि जि ल्य नी य ग व कि न ॥ सु ध ना जी वि ग यु रा ॥ ग दृ ष्ट्वा वि ष्ट ना स र्धु सु ना र्थ म न ना थ ॥ आ ॥ अ सि गा व था रि प्र ना ना न न य
का वि द ॥ मा ग स क र्धु ग दि वा आ न रि थ सु धा म वि ॥ या ग मा या यु रा व न ॥ मो ह यि त्वा थ दान वा न ॥ उ व मा रा द्य र ग वा न म क ॥ लु ना ग स ग य ॥ लु य यि त्वा सु ना न्म वी न म क ॥ लु रु क
व त्त ल ॥ य थ ग च सु न द्वा ला ॥ ग र व म धु सु द न ॥ मा हि नी नू य मा क्क य ॥ द यो ना मे ग ना रु न ॥ ना व द्वा ॥ सु र्थ न द्वा ॥ ये न स्य न म थ वृ व न ॥ वि वा द स र्धु द यो ना ॥ अ मृ ता र्थ ग दा क

दा २

20

कदाच
खलु ॥

वना ॥ उर्वयवर्तमानं भूमाहिनीयुयमास्तिना । दृष्ट्यायागदादेत्या ॥ सर्वं नमना न मा । विस्मयन समाविष्टा वरुवस्त्रुखिगं कृष्ण ॥ ॥ वलिनुवाच ॥ सुधातया विरुक्ता सर्वं
 लोकिहं नय । लीधुत्वं नमहाहा । नेकुन्यवचनं मम ॥ उवमूकाश्च वाचदं समयमाना वलिपुनि । श्रीलभं नैव च विष्णुसं ॥ कुरुय हि विद्युत्पिता ॥ गुरुन साहसं माया मूर्खत्वम
 गिला । रिता । अलोचत्वं निद्रेयत्वं । श्रीलभं दाया ॥ स्वरावजा ॥ निस्तरत्वं च विष्णुयं धुरुत्वं च वगत्वं ॥ स्वस्तीलभं च विष्णुयादायाना स्वरुमं लय ॥ यथा च भवदा नाचव
 काहि सायना यल ॥ काकायथ ॥ उजो नाच । अयदानो ॥ उवक ॥ धुरुत्वं तथा मनस्थाने । श्रीलभं सगर्गवधि ॥ मया सह रुवहिष्ठ कथं सख्यं यवर्तनं । सर्वथा गन विष्णुया ॥ क
 युर्यं च वका ॥ कुरु ॥ गस्मा रुवहिष्ठ ॥ मं चित्वा काया काय विचक्रे ॥ लो ॥ कुरुय यत्र यावृष्टा । युयत्ना दात्मना हिनी । उवमूकं रुवचनं । गयादद्या वलि ॥ स्वयं ॥ उवाच युहसन
 वोष्ठा । मद्यकादगरी नया । या त्वया कथिगानायां गम्यां गम्या अनयिया ॥ तासं त्वे कथमानानां । मध्यगना सिंलभं ॥ किं त्वया वरुना कं न । वृत्तवचनं हिने ॥
 युहसादवी आवाच । वलवोष्ठा दननं ॥ कविस्था मित्रं वाच्यं । सूका सूक मिगियुता ॥ ॥ वलिनुवाच ॥ अयामृगं च सर्वं । विरुज स्वयं यथार्थं । त्वया दत्तं च गृह्णाम ॥
 सख्यं सख्यं वदामि ॥ उवमूका नदादवी माहिनी सर्वमज्ञला ॥ उवाचोष्ठा सुवानं सर्वान् । कुरुत्वा लोकिनां गनि ॥ ॥ श्री माहिनुवाच ॥ युर्यं सर्वं कृतायां । जोगादव
 नकचिनु । अयाय वा सस्युका । अमृगस्या धिवासनं ॥ कियं गामसनं ॥ उवा ॥ लुरुक्का किंचिदस्मि व ॥ अरुगं यानलं कुरुय । तावन्न न विनय ॥ न्यायाया जिगविह न दगमा

३६

15

10

5

लनधीमगा । कुरुया विनियोगश्च । लीधुत्वं त्वर्थमवच ॥ गथनिमलं गुरुसर्वं यथा कंदवमायया । चक्रुस्तथा विदे गया माहिगाना गिका विदा ॥ माया स्रुत्वा च गदा । रुवगां निवृ
 त्तानि वै ॥ मनास्त्रु निमहाहनि । मयुरा निमहागिच । मयूरय विविस्ते ॥ सर्वं सुस्त्रागा ॥ समलं कृता ॥ क्लृयं चित्वा सुसंनद्धा ॥ युष्किलं लभं गग ॥ नागो जागवत्सर्वं ॥ कुरुय वमया
 मृदा ॥ अथ यमियुजा मेच । योगे स्नानयुगा सुदा । अमृता वलिमूर्या । यकिरुगा यथार्थकर्म ॥ सर्वमावच्छेदकृत्वा । गदायाननगा । सूबा ॥ वलिष्ठवृषयवोष्ठा । नमस्वि ॥ गंख
 वद्धो । सुदंष्ट्रु वसंदादीकालनं मिर्विरीयल ॥ वागा विविल्लुलं ॥ कुरु निवृत्तं ॥ युष्टा सवस्तथा ॥ गथमृदाय मृदोच निगुरु ॥ गुरुभवेच ॥ महिष्यामहिषारुष्ट्र । विजालाख्य
 ॥ युगायवान् ॥ चिद्रुना रथामहावाङ्मूर्तिरुभनवृषासून ॥ विवाङ्मूर्तिरुकाद्याना । धात्रो दीद्यानृदलं न ॥ उगचो अच वदवोदय दानवना दसा ॥ यथा कर्म आय विष्टाना ॥
 ॥ कुरुस्तथैवच । नयचिर्लगादीनां देत्या नायकिना । स्तिगा ॥ दृष्ट्या सुदानया दद्या अमृगार्थं हि वेद्विजा ॥ यद्रुगं गच्छेत्तु हि । गयादद्या कुरुमं रुग ॥ सर्वं विष्णुयिना म
 ॥ गुरुहीनकलभागदा ॥ अरुयायनयायका । साक्षात्मा विष्टमाहिनी । कलेष्टुन गदादवी कल । लन विना जिना । लुलुरुयत्रया कात्या । उगर्नमं लमं गला । यनिवृत्तं धना ॥ सर्वं
 सुनोक्त्वा सुनाकिं । आनगा सेल्लभदव । यगर्गं सुनारुमा ॥ गान् ॥ दृष्ट्या माहिनी सद्यः । उवाच युमदा रुमा ॥ ॥ माहिनुवाच ॥ अगं अगिथया रूयाधर्मं सर्वं स्वसाधका ॥

क १

५२

५२

[illegible]

अमृतार्थं त्वना विना । उद्य विज्ञानं दायं कृत्वा दवा दवानां ममृतार्थिनो । यदा मुनं यायुका माया ३४ यत्र मंडूकं यथा चन्द्रा कौस्थिक धिनो । विष्णुः प्रमिता गतं असंशयं तदा गच्छति त्रिभुवनं तदा
 होइ विंशत्येव । त्रिगणं न मायं दः कर्तुं धनमहीयते । उममानं ४ तदा कृदिं चूर्णयामास वेतदा । समादि ४ सर्वं लोका ४ चूर्णितं ४ गदा रुचते । तथैव न कर्तुं धनं चूर्णितं चं स च वाचं ॥ दृष्ट्वा तदा महादं वी । गच्छा यत्रि सुर्मं सिता । निवासं सर्वं दवानां तस्या ४ यद गलं रुचते । यी ० नस्य समीपे यत्र निवासं गतिना मरुत ॥ महता मालयं
 यस्माद्यस्माच्च च वलं यजं । महालयं त्रि विद्यानां जगत्तु यत्रि माहिनी ॥ कुरुधूमनूया सोऽजा काले विलेयं गगनं ४ सुधां समर्थं च लुपि । तिना धानं गता रुचते ॥ वासुदेवा
 जगद्यानिर्जगतां कावले यत्र । विष्णुः ४ युरावा तं गङ्गा नं सनाथं कायं सिद्धिदं ॥ अमृतं च लं विना लभ्ये जागं देव विद्येयं याग । विना देवं न जानीध्वं उद्यमं हि निवर्त्येक
 ४ था गयधनं ४ सर्वं ४ क्रीडां चर्मथ नं कृतं । सिद्धिर्जाता हि दवानां जसिद्धि न सना नयि । अयुधं नंद वरा लुका यिता देव्या धं माया यु विमाहिना ४ युन ४ अभकं
 कुरुयुता ४ तदा रुचते । विष्णु गगनं जमाना सुदानी ॥ ॥ गिनी स्केन्द्रेयना लोकं दानं खलु लेव नभ्यं अमृतं यत्रि यद्यं माहिनी अचगात्रं कथनं देव देव कदन
 युक्तं लोका दलं ध्येयं ४ ॥ १२ ॥ ॥ लामण उवाच ॥ तदा तं गजमानं सज्जो क्रियं तं ४ सना नत्रं । लनका टिपु मूर्या सात्महा वलयं न कमान । विमानं मात्रं कृतं द
 महात्मा वेवाच नि ४ सर्वं वलं न सार्द्धं । देव्ये ४ सभगा विविधेर्महा वलं ४ सनात्यु इडा वमहार यावेह ४ ॥ स्वा निनूयाति विजुं ४ समाथ ३ ४ सहसुनं ४ क विद्या घानं मात्रं ४

[illegible][illegible]

20

कंदन
खण्ड॥

५

५१

समाना महात्मा नाक सुदानी लक्ष्म वाव धावन ॥ तथेव सर्वान् गुणमानं सर्वान् उक्ता नाक सुदानी लक्ष्म वाव धावन ॥ सर्वदवास्तु वा विना ॥ इदुर्वर्यम
वीगा मही हित्वा गगा दिवं ॥ यावद्विर्गगो दवा नाक सुवेत्यत्र गमन ॥ नालिने रक्त मां धिर्वं नमहा गो गो ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
कल ॥ समुत्थमनसा लक्ष्म गदा मुय वाव वग ॥ ॥ यथा वाच ॥ नमो दधी महा दधी ॥ दव दव उ न त्यग ॥ त्वना ॥ धारु वे द वं न ॥ गहि मां वृष रु धु ॥ उव मु क सु दा
लक्ष्म ना विरु न सु ॥ मौर्य ॥ नालिने रक्त मां धिर्वं नमहा गो गो ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
नाक सुवेत्यत्र गमन ॥ नमो दधी महा दधी ॥ दव दव उ न त्यग ॥ त्वना ॥ धारु वे द वं न ॥ गहि मां वृष रु धु ॥ उव मु क सु दा
दान न्य ह न वं ॥ ममा धरु क र गो सो ज्ञा ग गो हि ग वा किर्क ॥ सर्वथा म वे रू ग ना मा लु य स्तु न म न य ॥ वा हा स्तु द्य ना रु ॥ मा म ना ॥ धारु वे रू दा ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
न्य व द द ल क्ष्म नं ॥ नालिने रक्त मां धिर्वं नमहा गो गो ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
सूना लक्ष्म ॥ सर्वथा म वि व ल र ॥ उव मु क सु दा ना ॥ दधान निव सा ॥ निर्वं ॥ मो लि स्तु न द ॥ धारु वे रू दा ॥ मा म ना ॥ धारु वे रू दा ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
उक य ध न नं ॥ यथा ॥ लक्ष्म कृती म ना ह नं ॥ वदं ध नं ॥ उ ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
च ३

३६

५

५२

५३

कृता गथा ॥ निवसा धृगया लक्ष्म सुधा वे म लु मालया ॥ लु लु रथ महा दवा ॥ दवाना म रु य यु द ॥ वर्य ध ना ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
महात्मा धका य नं ॥ नालिने रक्त मां धिर्वं नमहा गो गो ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
सद मी मां म मा ना ॥ लक्ष्म ॥ नालिने रक्त मां धिर्वं नमहा गो गो ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
॥ यु म रु ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
नमं य नं ॥ नमं द र ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
॥ उव न म ल य ॥ यथा ॥ लक्ष्म ॥ नालिने रक्त मां धिर्वं नमहा गो गो ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
या म नि र्म स नि ॥ नालिने रक्त मां धिर्वं नमहा गो गो ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि
वा ल थ ॥ नालिने रक्त मां धिर्वं नमहा गो गो ॥ निर्वं नालिने मां का कृती चन्द्रा यिरु य वि

७१

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40

45

शिवानु २

वनसवियुवर्थाखजदात्मनागदा ॥ ॥ निग्रीकृदयनालकदात्रखलुंलेवल्लभदुधीचिन्मूनिआश्रयकथननामयाउल्लभधाय ॥ १६ ॥ श्रीमन्मन्त्रोवाच ॥ गगनं सर्वमनः
 गगनं दृष्ट्वा न विनश्यन्नगं विनश्यन्नगं सुवर्णेनैव कथयन् विविधं वद ॥ सुवर्णं चोक्तं यो मां संगां मुवाच नवीयनि ॥ कलं वरं दधीचस्य ॥ निष्कलं वचनं नाम ॥ गगनं च वचनं
 मत्वा गगनं कलं देवनिष्कगगनं निर्मास्य कृत्वा सद्य गगनं धत्वा कलं वरं ॥ जगद्वत् ॥ सा निष्कलं निचक्र ॥ गुणानि वसुधां गगनं सर्वं लोके वैवर्जं निरावृत्तं निवसुथ ॥ जगः
 न्या निचोक्तं निवक्र निगस्य जेष्ठकृदानीं जगद्वत् ॥ सुवर्णं गगनं लिखितं जालं मया लुब्धकान्नचक्र ॥ विनिनामय यदेत्यानं ॥ लुब्धकान्नचक्रं लिखितं महावल्लभा कमाधययुद्धवः
 स्तुनायका वृद्धा गगनं त्यजा ॥ गगनं सुवर्णं दधीचियत्नीयाय विना सुवर्णं सिद्धयेत् ॥ विना कयलं गगनं सैव सैव ॥ सुवर्णं यतिं ददम ॥ विनं ॥ कृत्वा च गतं वै मेदः
 सुवर्णं ॥ कृत्वा गगनं च वृत्ताय साध्या ॥ ददो मनीसा यमनी वनूया ॥ तदा सुवर्णं मुषिदवयत्नी ॥ अहो सुवर्णं इह गगनाय सध्वं सर्वं कसकाय गगने वल्लभा ॥ गगनाच्च सर्वं यजसा रवं गुदि
 लोकं साधयत्नीत्यवाच ॥ एवं लभ्यं ददो मनीसां सुवर्णं सातयस्तिनी ॥ उय विनं धृक्मूले सोदरं दानं यत्कदा ॥ निर्गता जगता इह दधीचस्य महात्मनः ॥ सा द्वा इडावता नी सो वि
 थय ॥ विना यो महायुगो युद्धस्य जननी गगनं मुवाच वै विनं कलं ॥ सुवर्णं ॥ विद्यानादं विनं गिह स्वसन्निधि ॥ अथ कसमहागगनं सर्वं सारु लोका ॥ गगने वरायमाना सा सुवर्णं गगनं य
 धनि ॥ यतिमन्त्रं गमसा धी यनमनससा धिनो ॥ एवं दधीचियत्नीया यतिना स्वर्णं मा वज्रं ॥ दवाय कृत्वा नमुसा देत्यानं यतिमन्त्रं का ॥ अजन्म ॥ अजन्मत्वात् ॥ महावल्लभा कमाधययुद्धवः
 म१

सका गिवः ३

ॐ यहीना १

म३

कृष्णलघियमानन चामयन विनाजिन ॥ गदासर्वे सभनाहि साकयालेथुता विरि ॥ वृक्षं विलासने सर्वे साकयाला महानुवा ॥ रुयहीगांरु निर्वनत्रलमायय ॥ मनसा विनयन सर्वे साकयाला कः
नकरी ॥ निनर्मयुष विधिवन महानुवायका मुके ॥ गुर्वल विदिना संघा विनयनयन लुहि ॥ उवाचचन दालके वृहस्य निर्वदात्रधी ॥ वृहस्य निर्वदात्र ॥ कारिक गुह्ययक्ष गुमन्दा
नगयादलो ॥ मेमेअयदिलथन सर्वेयार्थनर्मलय ॥ गत्ययिदासमथ निनन्यामहानुवा ॥ योजनीयाहिदवन्द सर्वेकामसमृद्धय ॥ स्नात्वामधमं संथ गिला मलनसंयत ॥ निव
स्यवाचनं कृष्ण दन्धयुषारुलादिलिथय ॥ अन्धयसमथ स्तवर्न लिङ्गमर्द्धय ॥ स्तवर्न रुवं स्तवर्न वा कोनययमयुष ॥ जनवा विजनवा वि जनवा वागवाचन ॥ गलिङ्गमर्द्धय हक
पदायचविनयग ॥ ग ॥ मोदहिलिङ्ग निङ्गमम्याच्चन गुर्नरुवत ॥ वाक्काच्चन गुर्नयय मर्द्धयार्थनर्मथ ॥ यावर्नोच्चवलिङ्गच रुर्नवायगसंरुक् ॥ गवाचना लिङ्गमर्द्धय जिर्नचमहा
रुर्न ॥ गस्माद्वर्न विराजन निवयुजाचनं वृद्धे ॥ कर्कषं नियनलेन गीर्थस्नानादिकं तथ ॥ यच्चयिषुनन धृत्य वायुस्नानमल्लधन ॥ कृतस्नानमेकवर्ग उद्धनन विनयनग ॥ गवाचनादल
यिषुर्न उद्धयस्नानमाचन ॥ नर्थास्नानं विलिङ्गच महानर्था विनयग ॥ गगयुदायसमथ स्नानं मोर्नसमाचन ॥ यदीयानां सह संघ दीयनीय ॥ सदा निव ॥ अथ दीयननेना
यिदाकिं नदीयमालया ॥ घृतेन दीययदीयान निवस्ययत्रिगुष्टय ॥ गथारुलेष्टदवेष्ट नवेष्ट नवेष्टयक ॥ उचचावेष्ट ॥ अथ गलीरु लिङ्गमर्द्धय सदा निव ॥ यच्चयुदायवसाया
वृष्टि ॥ सर्वार्थसिद्धय ॥ यदकिं पकृष्टीन गगमेष्टरुवर्गथ ॥ नमस्कावानयकृष्टीन गावर्तययत्नग ॥ यदकिं नमस्कावेष्ट ॥ यदीयानां सदा निव ॥ नाम्ना ननेन वृष्टी सो सवेनी

20

15

कुंदा
न ॥

५३

यायथविधिः॥नमोऽयंहीमाय नीलकण्ठायवधसं । कयर्दिनसूत्राय शमकण्ठायवेनमः॥वृषध्वजायसामाय सामनाथायवेनमः॥दिगम्बरायराय उमाकान्तकयर्दि
न ॥ तथा मयायद्यायाय निधिविद्यायनेनमः॥शालयियायशालाय शालानाथायनेनमः॥महीधरायशालाय यलूनयनयनेनमः॥शिवनाथकायसिंहाय सन्निधे
सखायच ॥मीनायमीननाथाय सिद्धाययनमः॥कामाक्षकायवद्धाय वृद्धीनायनयनेनमः॥कथागाय विनिष्ठाय निष्ठाययनमात्मने ॥वदायवदवीजाय वदगुप्तायवे
नेनमः॥दीर्घायदीर्घनूयाय दीर्घार्थयमहायच ॥नमोजगत्तुगिष्ठाय शमनूयायवेनमः॥गजसूत्रमहादेव्य जम्भकासूत्ररदिने ॥नीललाहिगणुकायचतुर्मलु यियायच । रुकियि
यायदवाय, क्लृमाक्षानशयायच ॥महन्नायनमः॥महादवहनायच । गिभगाय निवेदाय वदाक्षय नमः॥अर्थय अर्थनूयाय यनमार्थयवेनमः॥विष्णुनूयाय
विष्णय विष्णनाथयवेनमः॥लंकिनायचकालाय कोलावयवनूयिल । अत्रूयाय विनूयाय सूक्ष्मनूयायवेनमः॥गम्भनवासिनयुर्थ नमः॥कृतिवाससं ॥गम्भकालाव
मायव नूदहमिणवायच ॥इन्दुय इन्दुवासोय इन्दीवयवन्निहिल । सिद्धयतिद्वनूयाय लिम्भनीयनयनेनमः॥नमः॥युलवनूयाय युलवाथयवेनमः॥नमानमः॥का
कावलकावलयन मृत्पुजयात्मरवेस्त्रयिल । शम्भकाय लिनिकलुगकृत् । मेवीयनेसकनमः॥लहगव नमः॥ ॥वृहस्यगिन्वाच ॥नाम्नांनमः॥लहस्य उच्चायवनि
नागदा । युदक्षिणनमः॥कृत्तस्त्रोऽयत्नगः॥कार्ययुदायसमय उद्युर्थ लंकवस्यच । वर्वर्गसमादिष्टगवलेक महामन ॥नीधुंनमः॥लहान यशयश्चः

५०

10

५

चार्यः मृत्विजः वा उल्लसवन् ॥सूयविक्रितनगेनेव रान्वेनमहात्मना ॥नूनभक्तमलगं कर्मदीकायत्रलहि ॥वलिनावापुमधानीयुर्लुकरु समादध ॥यावद्यकृणगंयुर्लुगसावाक्षरविश्र
ति ॥युनाथाकंमयाचागुक्ष दित्यावगमूहमं ॥खनेननेनसंयुष्ट रनेवानहविनीपुत्रः॥वदुनूयलमेहनायुगारुभावहवसं॥आदित्यकण्ठयनेव अयनीगसुदेयुः॥उनीगथ
संयुक्तं वक्तालोकयिगामहः॥नेत्रयक्षयवीगधस्वक्षययनमः॥दिना । कलुकासुयुदलं हि । सामेनचमेहनात्मना ॥मखसाचसमानेना । कृजिनेयनमाहुर्ग ॥गथिवयाइकचवम
आदलंमहात्मनः॥गणुरिकासमानीना । रुवानयाचार्थसिद्धय ॥वर्वर्गवनेदलं विवृष्टवेदुनूयिने ॥अरिर्विद्यगदोली । नो । वामनाजुदिगिगथ ॥कण्ठयचमहानेजो । यकृवा
दंजुगमय ॥याक्किकस्यवलं ॥सोयि । कुलनाथं स्वेययुः॥गदामहीनः॥सजगममोर्न युकेस्ययनेनयुददारत्रल । सवामभावदुनूयिचसोका । द्विष्टयनमात्मासूत्रकाथहना ॥गी
हियंथारिपरिगुह्यगजने ॥मुनीन्वद्वेनलेमहात्मा । त्वत्रलनक्तसचयकृवाट । आयसुदानीजेदकर्वधः॥उद्भानसोमधयगाहिसोकाग चकान अवावदुनूयवेन ॥उद्भियमानो
हनवानुसन्नीपुत्रा । वदानवथाहविनीपुत्रः॥युः॥ददलंनयकृ मनुमधवनसुदा । इति लिगामहानेजा । वामनावदुनूयधुक ॥वदुनूयलमेहना । याकमासीदिगिगर्न ॥युमानस्य
चवदा । वीमेनस्यमहात्मनः॥उत्तुत्वावलं ॥आह । पुणुमकोर्ववृद्धिमान ॥वाक्क्षमः॥कनिर्ग्रायु । कानर्गसि निनोदगा ॥गरेथनिमत्वात्वविना । वृत्तिगोचद्विजोमथ ॥पुणुमकोसमानस्य
उयर्दिनेसंस्तिगो । ददलंनमहात्मानं । जीहविवदुनूयिर्न ॥त्वविनोयूननायामोवलं ॥संनयिगुगदा । वक्तेवाविः॥समायागा । अकनेवनचायनः॥यः॥नादामहानाजकागनसुवेमदिनी

महा३

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40

45

20

कदा
न॥

३०

तमे ॥ वरं वृषु रुरुं ग सुर्वान कामान दनं दामिने ॥ गच्छुता वचनं गस्य वक्ष्ये ॥ यत्र मं द्विने ॥ वन्या मा संगा वनं सा कर यावह ॥ यदे भयु सन्ना सिमू जना मना पुला द हि मयः
 विजाना सि अयत्नं गये वच ॥ उवे मूक सुभा वक्षा नाये केन इनात्मना ॥ उवाच यं सन वाक् समवर्त्य कन सुवो ॥ जाते स्य हि कुर्वं मृत्यु न गजा नी हि न त्वग ॥ पुहस्य गाव के यो
 हस्त अयत्नं ददामिने ॥ ॥ वक्षा वाच ॥ गदा व देव्यस्त अयत्नं ॥ विष्णु निन सन य ॥ विनारु कन विथु नु अजयत्नं ॥ विष्णु नि ॥ गच्छुता वक्ष्ये ॥ वक्ष्ये म व दत्ता व का सून ॥ मजः
 यत्नं वमर्ष्या मरु कन विना युता ॥ जाभा हं द व द व न य सा दा ल व सै यु नि ॥ उर्वल व व रा ल्वा गाव का हि म हा व ल ॥ मूचू द स मा लित्य द वां स ज यि ना रु च न ॥ यन ॥ यन व क्ता
 ॥ ॥ मं ग मं गा न के न हि ॥ मूचू द व ल ना यि अ य मा य ॥ सूना सु दा ॥ किं क र्त्तुं य हि वा सा ॥ यि य मा मे नि न ग ॥ र वि न य मे नि स्मृत्य ग ना म व क्ष्ये ॥ य द ॥ व क्ष्ये अ ये ना ल्वा
 अ व व ल स वा स वा ॥ ॥ द वा उ च ॥ व लि ना स ह या ना ल मा सु सो म धू सु द न ॥ विष्णु वि ना हि ने स व व द्या या घा ति ना ॥ य त्र ॥ दे व नु म हा रा ग ॥ गुरु म ह सि न ॥ यु ता ॥ य द्वा य न स न के
 च व धि य नि न स न य ॥ क ना या थ ने र ग व न ल ॥ स व नु हा ल य ॥ दा ना य वि न हं द व सु दा ना ते वि धी य तां ॥ के य तां च य तां य तां ॥ र व हि न न च थ व च ॥ य य द वा वि जा नी ध ॥ य वा
 वा न व वा क ॥ य र वि स्म य मा य नो ॥ उ च्च दे वा ॥ य न स्य न ॥ ग ना न रा न ना वा ली मा ज म् सु हि मा ॥ स य ॥ वृ ह स्य नि दू न स्मृत्य स व द वा व व न व च ॥ हि मा ल ये म हा रा ग ॥ स व का यो
 र्थ ने ना वा न ॥ ॥ द वा उ च ॥ हि मा ल ये मा हा रा ग ॥ गृ ण व च नं हि न ॥ क र्त्तु म ह सि द वा नी ॥ वा र्त्त वा क् वि णा व द ॥ अ न य त्म म हा रा ग ॥ स व व च न य नि ना ॥ ग सा स व व र्थ

गं ४

10

५

नाम ह नु सहि ना वि ॥ ॥ साम न उ वा च ॥ उ व म स्य थि ना द वे हि म वा न नि वि स र म ॥ उ वा च द वा न यु ह न वा र्त्त वा क् वि द्या म् व ॥ म ह नु म द्वि न्ध न दा क् य हा स स म न्नि ॥ ॥ हि म वा
 न वा च ॥ अ य द्वा य व र्थ स र्व म ह नु ल क्ता ध ना ॥ किं क र्मा सू न का र्थ च ना य क स्य व र्ध य नि ॥ यं य का व र्थ स र्व य दि स्या म सू ना रु मा न ॥ ग दा व र्थ द्या ग या म स्त न के स ह वा न्ध व ॥ अ च लो र्थ
 वि प क्त्त किं क र्थ क न वा नि व ॥ ग स्य ग द्वा च नं ॥ स र्व दे वा स म व र न ॥ ॥ द वा उ च ॥ स र्व य र्थ व र्थ च व अ स म र्थ व र्ध य नि ॥ ना य क स्य म हा रा ग ॥ गे ल्का र्थ वि वि न्त्त ग ॥ अ ने सा
 ॥ र व व द्वा ग्ना न का हि म हा व ल ॥ ग दा वा च म हा ने जा हि मा वा न स ॥ सू ना नु य नि ॥ क ना या थ ने रा दे वा ना य के द्या रु मि क्थ ॥ क थ र्थ र्त्त व न ने व का र्थ र्त्त नु म मे व हि ॥ ग दा सू व ॥ क थि ने स
 र्थ म ने ग वा ल्थ आ क य त्प ना क र्थ ह ना ॥ गृ न य दानि वि ल्प वा क् मे ने ग वा च द हि म र्वा य र्थ ने हि ॥ नि व स्य य न च धी म ना ग दा व ॥ अ दे र्थ ना य के मे म हा स्या ॥ ग दा स र्व सू न का र्थ
 गुरु स्या द्वा आ क स र्थ म ने र व च ॥ ग स्या न कि य तां र व हि र्थ थ व द्वा म ह न ॥ क नु ग य वि न हं ॥ क न्या ग थ ने स्य नि व स्य था ॥ नि री क्ता मा लु सू र वि दानां ॥ ग स्य ग द्वा च नं ॥ गृ ता य ह
 स्या च ॥ सू ना सु दा ॥ ज नि ग या त्वा क न्या नि व र्थ का र्थ सि द्ध थ ॥ सू ना ल च नि व र्थ क नु नी धी म हा म ने ॥ आ धा न स्त नु द वा नां ॥ र वि ष्णु नि न स न य ॥ अ न्य का नि वि न जा थ द वे ॥ र व गृ
 ह मा वि ने ग ॥ य त्नी के न्य चि य पु च्च सू न का र्थ क न चि ने ॥ ज नि ग या च क र्थ का म न का का र्थ सि द्ध थ ॥ द वा नां च मृ वी नां ॥ ग ये व च न य सि नां ॥ धि र्थ ने र व नि म्ना क न्य ज न न मे व च
 गृ य ज न यि त्वा र्थ के नु का च व ना न मे ॥ य ह स्य म ना वा च ॥ स्व य नि च हि मा न र्थ ॥ ॥ म ना वा च ॥ य इ क र व नां वा र्त्त य र्थ म त्वा ध ना ॥ क न्या स दा इ ॥ स्व का र्थ नृ न अ नृ न यि थि

मनक कार्य सिद्धयः

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40

45

कदा
न॥

५६

लभककात्री महामन ॥ गस्मादिमृशसुचिरेस्वयमववृद्धा यथा हि न लेनयनगइयुगी ॥ हिमवानइयगुत्वा विषयावचनं गदा ॥ उवाचवाञ्छु भधावीययायकनलनिगं ॥ अनकन
 युकावलयनयामयजीवनं ॥ रुविश्रुतिवगत्कार्यधीमातायनयलहि ॥ क्रिययावचनत्कार्यययायकनलनिगं ॥ पूर्वयुवलिगानन निविष्ममहिषीगदा ॥ दधायज० भकनाम
 नारायणवगीगदा ॥ महाविद्यामहामाया महालक्ष्मीस्वययिनी ॥ नृजलीकडुकासीव अवादाकायनीयरी ॥ गविहृतिविष्मलोकीं ॥ ०० ययमां संती ॥ वरुवसामहारागभनाचाव
 विलायना ॥ मृगिचकुसुदायवा मृगयाययदकिनय ॥ मनायोरुविश्रुत्यायासुथहिमवगानिगं ॥ ०० गस्मिन्नजाना निविजानामनामग ॥ पाइइ गायदोदवी सर्वयचिसुखय
 दा ॥ देवईइरयाभइ ॥ नेनुरुप्रभुवागल ॥ ०० गुन्मयवयनय ॥ ०० वृ ॥ सिद्धवाविष्म ॥ ०० ययवयलमहगावचयविचक्षुसुथ ॥ गदायुसन्नमरुवत्सर्व ॥ ०० लक्ष्मीसयवाचय ॥ यदा
 हियागानिजामहोसगी गदेवयसममाविष्म ॥ ०० ययामुदयवगलेमहयय ॥ सवावलासिद्धगुलसुथेव ॥ ०० निजीसुचयुनालकदोत्रखे ॥ ०० निवल्मययवयसुथि
 विंलुगिगमायय ॥ ०० ॥ लामणउवाच ॥ वरुमानो गदासाधु हिमनगृहं गुरा ॥ अरुवययदाजागा हिमालयगृहं संगी ॥ महं ॥ हि हिमजगं गगावयनमुनेय ॥
 सुवर्गले ॥ यविचुगावीवरुडादिरिसुदा ॥ ०० गदाययजयलकं मेहं ॥ हिमवानयय ॥ गत्यादयनवडुय ॥ यावत्समागताडुय ॥ नादिनासीनिवा
 विग ॥ दानकं नेनेवेदा कलभकं किनवह ॥ यूनर्विष्मययामाय नदिने हिमवद्विनि ॥ विष्मका नेदिनालं उयवेलाडुय मागग ॥ गदाकं वयसुसुथनदिन

ययभनुर ॥ ०० नयसुनिविद्याग नदिनेवाञ्छुमववीग ॥ गथनिमत्तगं नदी यवर्गवहिमालय ॥ ०० नयामाससगदा लंकरं लाकणं करं ॥ दृष्टुगदानी सकलं पुर्वयुक्तं तथाश्यालं
 विनिमीतिगकणं ॥ कयर्दिनचलकलाविरु विगं वेदानकवयं ययमासनस्तिगं ॥ वेवत्युगायचगदा हिमालय ॥ ययमूदयायदहीनसत्त्व ॥ उवाचवाञ्छु जगदकममरं ॥ हि
 मालयादाय विदावविष्म ॥ ०० गदाययमहायवे यसादाकवर्णकव ॥ ०० गनकयत्तयानित्यदर्शनार्थममाचल ॥ कमायचगृहसुथानायथमेमदगनं ॥ ॥ हिमवानुवाच ॥ अचल
 ०० ययवाचद निनीननटकथेन ॥ ०० गस्मानयानयासा ॥ नागनकयं गइयुगां ॥ अचलवावेवीचुल ॥ ०० गसुनवाञ्छुकाविद ॥ ०० ययकमावीसुगं ॥ ०० गनीचानुपुलायिनी ॥ नीनीगयामेत्स
 मीयवावयामियन ॥ ०० यन ॥ ०० गगुत्वावचनं गसुगं ॥ ०० निनायं निरुयं निरुहं च ॥ गयस्विनाकवचनं निगमाडवाच ॥ ०० नीपुहसन्नुवाली ॥ ॥ ०० नीउवाच ॥ गय ॥ ०० गं ॥ ०० निगं
 नीलाकनीमिविचुलं गय ॥ गववृद्धिनिर्यजागा गयसुप्रमहात्मन ॥ कलकायुक्तं ॥ ०० गुरागवकुदिमुगं ॥ ०० यावत्सुदय ॥ ०० लुत्वा मेहं ॥ ०० वाञ्छुमवीग ॥ ॥ ०० गीमहायवडुवाच ॥
 गयसाययमलेव यकुनिनालयामहं ॥ यकुत्यावहिग ॥ ०० गुरागवकुदिमुगं ॥ ०० गस्माच्चयुक्तं ॥ ०० सिद्धिं नकार्यं संगुहं कविगं ॥ ॥ यावत्सुवाच ॥ यदेकयययावाचा वचनं गं
 नत्वया साकिपुक्तं निवसया दनीगसुगं ॥ ०० गदिमुगं वकं ॥ गलेनाहियथगथं ॥ यकुत्यासर्वभगव ॥ वेदमस्तिनिर्गनं ॥ गस्मात्तयानवकं ॥ नवाञ्छुयकथयन ॥ ग
 कुं ॥ ०० सिद्धिं गयययययसिगं ॥ ०० गस्माच्चयुक्तं ॥ ०० गिथवाचानिर्गक ॥ ०० यकुगं ॥ ०० ययगदुत्वा ॥ किमर्थं गयगय ॥ ०० लयानं ॥ ०० धूनायसिन्निगो हिमनिपुला ॥ यकुत्या

सूना ४

३१

20

कदा
न ॥

नद्वर्चनिर्बर्चन ॥ गमानया मिचारेव तयसाकवलनहि ॥ गथाचलनमहना सुयथा हि सदा निव ॥ जानीष्टु हि सदा राग ॥ सत्यं सत्यं वदाम्यहं ॥ मरुतायमानो जन्मना मवाच हिमालयं च
 गथेवमर्मा ॥ गथचमर्मा मिगला विनीतदा ॥ सामन्द्यं यद्वैतनाजकेना ॥ यमसुदोभनयथचयवृता यथगमनं च विवक्षामा ॥ गतं गतं सवैयु सवीरि ॥ यत्रिवो विना ॥ गतेव गतः
 ससुय यत्रमार्थं सनी गदा ॥ गयसागनमहना गयसा सीञ्चनाचन ॥ तदा सुतो सुता ॥ सधुवा कालं नवर्ण गता ॥ ॥ दवा उच ॥ तया देव त्विदं सर्वं जगद्वगञ्चनाचन ॥ दायुमहं सिदा
 वा ॥ नस्तु दया भाययेयन ॥ अस्माकं प्रकवकल ॥ ल्या कलुषवचसा ॥ विमुखाचने दावेका ममसायत्रमं लहि ॥ नित्रिजा गयसा रुतं दावा मिसे र्वमहं ॥ क्वात्वा उक्ता जन्ममासु कीना विवयमा
 दुर्ग ॥ गणलुयं सूनलुयं क्वा ॥ लोवा स्थानि ॥ अरुने ॥ तस्माद्यद्ययगुर्न सुयमा भानिर्वगनं ॥ इतस्तु नायिगा कलन वटकं धनेध विना ॥ सुशमानं लियकरिया ॥ सुखावृत्ता दयाचनं व ॥ न
 वलकियुतं विवृया र्वं ॥ यत्रिवो विना ॥ कसूदाथकू मूवक ॥ सनकयु सनदन ॥ सनागनाम दोगन ॥ सुधा विजया विजित ॥ जय गयजगत्सु न जय ॥ यत्रमहायु ॥ सनत्क माव ॥ स
 गथा नावद ॥ वरुवृ ॥ या ॥ अजभा महानर्ण ॥ गदा को मादकी गथा ॥ सुदर्शनं गथायार् ॥ ल ॥ सुयत्रमा दुर्ग ॥ गुणानि यवन्त्या लि ॥ दृष्टानियत्रमं छिना ॥ विष्णु ॥ समीप य
 नुमात्मना लुण ॥ ददृ ॥ सधु सुनदानवा सथ ॥ विवृवव ॥ यत्रमं छिनायिनि ॥ गीतं गदानी मूदधर्मो हात्मन ॥ गहिगहि महा विष्णु तका न ॥ गयसा ॥ गुणं स गयान्या
 वृत्त्यायत्रमं लहि ॥ लोवा सनकोय विवृ उवाच यत्रमं ॥ यत्र ॥ यस्मा रि ॥ सहिग अथ उजा मियत्रमं ॥ महादर्वयार्थया मानि विजा युनिर्व सुता ॥ यालिग हाथमधूना दवद

या

0

वचिना कधुक् ॥ यथा अथ गिगरेव कत्रिष्ठा भायथ गथम ॥ गस्माद्ययं गमिष्ठा मायगुत्रा महायु ॥ गयसा ॥ गुणं सयुक्ता अ संयत्रममहं ॥ विष्णु सुद्वयनं लुता उच ॥ सर्व सुना सुना ॥
 नयास्या भावयं सर्वं विवृया क्वा महायु ॥ यदा द ॥ यत्रा न न मदनान्दु गिकुम ॥ गयेव ध्रुव ल्या साकां नागका श्री विचावले ॥ यदस्य रुगवान विवृ नवा च यत्रमं ॥ मा र्वं क
 वृणां सर्वं ॥ निवत्रय ॥ सदा निव ॥ सनधे क गि सर्वया ॥ देवानां रुयना लके ॥ गस्मा रुवहि नैक यमया सा र्वं विचकले ॥ लुयुना लये र्वजगताम धर्ण चय ॥ यत्रय यत्रय ना ली
 ॥ गथायु सा लयने त्रयं यना ल्यनं गलं वल विजा म ॥ ॥ गिरी ल्कन्दयना ॥ कदा न र्व ॥ लोव न ॥ सुकवि न गिगमा धाय ॥ ॥ ॥ ॥ सुग उवाच ॥ नवमं क्वा सु
 दधवा विवृनायत्रमं छिना ॥ जग्म ॥ सधु महलन ॥ उक्ता मा ॥ यिनो किन ॥ यत्रयानं समुद्रस्य यत्रमं लसमा धिना ॥ यागवी ॥ ॥ किनं लुं गले सुयत्रिवो विना ॥ यत्रय वीग विवि
 ना उवसा विवृदा वृग ॥ वासुकिं सर्वं राज ॥ कसूला न्यन मो गथ ॥ कलुषय क्वा न न गथ क क्वा ठकन हि ॥ कलिकन च वा क्वा ॥ विवृत्क कल नूय ॥ लुखने वचय धन वद न ल वि
 ना जिगो ॥ द्वी यिन लुम ॥ ल ॥ यत्रय विद्या न गे न न ॥ ग ॥ धर्मा सामयु गे क य हि न ॥ महान् रा वृ विराज मानं ॥ कयत्र ॥ लोने ॥ नि विवृ म्दुग ॥ लुगा निनं दवर्न दद ॥ गदा व
 क्वा य विवृयु म्दुयथा देवदानवा ॥ सुद्व विवि वि ॥ सुके व दाय निवदानिने ॥ ॥ लुवा च ॥ नमान्दुय दवाये मदनान् कनायच ॥ रुमय लु विरागाय ॥ निनं गाय ॥
 विवृय ॥ निवि विवृय ही माय ॥ ही मा कयेन मानम ॥ शुभकाय जगद्व ॥ विवृयुया यत्रमं ॥ लुवा गा सर्वं लोका ना यिना मागा लमी ॥ लुना ॥ ॥ जग ना लमी ॥ लुम

॥४॥

0

20

सुनेद्यत्रिवात्रि॥ गनदृष्टानदादवी, सखि॥ यत्रिवात्रि॥ यावत्त्याचनदादृष्टा हिमवान्नित्रि॥ सह॥ अत्युक्तनयनासाधियुगम्य नित्रि॥ गन॥ गेयिनेयनदागुनर्वधु॥
वसुसर्व॥ स्वमङ्गमात्रायनदामहायन्म॥ सुगन्धविस्मयवाच्युत्रि॥ उवाचवाच्युमधुनहिमालय॥ किंवेकगसाधिनियथगथन॥ गत्कथनामहाला॥ सर्वगुणविना हिन॥
गच्छतामुमधुन, मुवाचयिननयुति॥ गयसायनमलोवयाविनामदनानक॥ जागृममहत्कार्यं सर्ववामयिदुर्लभं॥ अगुगुष्टमहादेवावतलार्थसमागन॥ सम्यक्कसुदामनयाः
लिनेहकथंचने॥ विचयनेचतयागुला, समयिगविनाधुना॥ यथगननमा॥ ननगनासो गियनानक॥ तस्या॥ सुवेचनं॥ त्वोक्त्वाययनर्ममदं॥ वधुलि॥ सहधर्मात्माउवाचस्वमगा
यून॥ सुगुह्याग्रगच्छमावयं सर्वचरुधना॥ त्वयाचाना विनाव॥ विनाकीवृषरुधुज॥ नृ॥ लुच्युक्तनदासर्व, हिमालयमृगानमो॥ यावन्नीसहिना॥ सर्वगुष्टवृष्टाहिनादृता॥ गच्छुयमा
ना॥ गदहिमालयाअनायवाहंववलिनीच॥ सर्वचलेना॥ यत्रियाय्यचात्सुको॥ समानयासोसदानेसुमालय॥ गच्छेवद्वे॥ सहचारलेयमहर्षि॥ सिद्धगलेयमहर्षि॥ युक्तमा
नागदादवीकुवाचकमलकृष्ण॥ दवानृषीनयिगुनयदानेसर्वानसमागनान॥ गच्छधर्मसर्वनये॥ नयनयनसमागना॥ स्वस्वस्वनेयथयवाः सगुणयनयामुदा॥ स्वस्वस्वनेयथ
यथासंशययनयामुदा॥ उर्वनदानी, स्वविगुगुह्येनगवि॥ नमवेमानाचनमनवचसा॥ सायावन्नीदवववे॥ सुयुजिना, साचिकुयनीमनसासदालिदं॥ ॥ नृ॥ निगुस्व
नयनालोकदात्रस्व॥ पुनैवममृगी॥ नोय्यस्तुय॥ रुसादयानामद्वि॥ निगमाध्याय॥ २२ ॥ लामनउवाच॥ उगस्मिन्नकनगमह॥ ननयथादिना॥ अज॥ ॥ सहसासः

नया३

थ२ अ१

५१

10

३४ ल३

यमुवथाहिहिमालय॥ गानदृष्टासहसात्कय, हिमादि॥ यनिमानस॥ युज्यामासगानसर्वानवाचनगकीधन॥ ॥ हिमालयउवाच॥ किमर्थमाननायुयंनुगागमनकावर्ण॥
गदाच॥ सयमुवथासहर्षयुत्रिवाच्यं॥ समागना॥ तत्सकालं कन्यायाचनिनीक॥ नानेस्मानेविद्वि॥ लाल, स्विकर्णादल्योनुवे॥ गथेगियाकापुत्रयज्जानीगानगयावन्नी॥
सात्त॥ नयत्रिगुला॥ निनीनृगवत्स॥ हिमवाननित्रिवाजथ उवाचयुहसन्निव॥ नृ॥ यमनामेदीयाहिवाक्यं॥ नृ॥ गमधुना॥ गयस्मिन्निवत्रिवासी, विनकासदनानक॥ कथमू
दृहमार्थाचयनानेककुसुम॥ अत्योसन्नानिदूथे, अत्युन्नविचर्जि॥ वृत्तिहीनचमुखेचकन्यादानेननसा॥ मृदयच विनकायज्जानीरादिगायच॥ अगुनाययमहायक
वादानेनकात्रय॥ कुलेनीलवयुविश्यावेथाविर्कसनाथगा॥ गुण॥ सयवययमिगसकनोयुदीयन॥ गस्मात्समया विचोत्रित्वाहुवहिर्मुखिसुहमा॥ यदागशामहन्मय॥ उगनाउगम
रुमं॥ गच्छतामिनित्रिजस्यवेचनं गमहर्षय॥ एकययनयाचसुयहस्यचहिमालय॥ ॥ अययउय॥ यथाकृगनयस्मिन्वेययाचाना॥ विग॥ निव॥ गयसागेनसुगुष्ट॥ युसन्ना
य॥ सदानिवे॥ अस्यास्तुत्येच॥ लेननजानासिहि॥ किंचन॥ महिमानेयप्रवेवनेस्मादनायुयकुर्गा॥ निवायनित्रिजामेनीकुनखवचनं हिन॥ गच्छतावचनं गेवापृषील॥ रावि
गात्मनी॥ उवाचत्वनेयायक॥ यद्वेनानयवर्धनं॥ अ॥ हमनाहनिमधह॥ नृ॥ यमावनमन्दन॥ मेनाककिचतामशसंलघ्यययथार्थ॥ गदामेनाउवाचदवाक्यवाक्यविनानदा॥ अ॥
मेवविमर्षलङ्कनकार्यं गदवहि॥ उत्पन्नहिमहालागमधवकार्यार्थमवच॥ युगेदोशानिवाथनि॥ तस्यार्थेवाचगात्रिगा॥ अ॥ नयानाधिनाजू॥ नृ॥ उलयत्रिगाविना॥ नृ॥ यंस्त्रीमहाला

१२

[illegible]

५२

[illegible]

[illegible]

धर्मा ३

[illegible]

म्य २

